सम्पादकीय
नवरात्र में व्यक्तित्व में सेवा-संवेदना के भाव बढ़ाने के प्रयास किए जाएँ 2

जगह-जगह चल रहे वृक्षारोपण के प्राणवान अभियान 3

डॉ. विन्मय जी का पूर्वोत्तर भारत प्रवास
आध्यात्मिक चेतना के उन्नयन में भागीदारी का आह्वान किया 6

मुम्बई अश्वमेध संगोष्ठी
साधक, संकल्पवान, साहसी और संवेदनशीलों के सामूहिक पुरुषार्थ का विराट अनुष्ठान बनाएँ - **डॉ. विन्मय जी** 7

ज्ञानदीक्षा समारोह
भारत के नवनिर्माण के संकल्प के साथ व्यक्तित्व गढें।
- **मुख्यमंत्री जी** 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 अक्टूबर 2022

वर्ष : 35, अंक : 07
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 27 सितम्बर 2022
वार्षिक चंदा : ₹60/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 800/-
प्रति अंक : ₹ 3/-

नारी सशक्तीकरण वर्ष

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

अपना स्वभाव उत्तम बनाइये

वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

वाङ्मय खण्ड 2 (जीवन देवता की साधना-आराधना) पृष्ठ 8.17 से संकलित, सम्पादित

स्वर्ग-नरक की सृष्टि

दार्शनिक इमर्सन कहा कहते थे, "यदि मुझे नरक में रहना पड़े तो मैं अपने उत्तम स्वभाव के कारण वहाँ भी स्वर्ग बना लूँगा।" जिसकी मनोभावनाएँ, विचारधाराएँ, मान्यताएँ उच्चकोटि की सात्विक हैं, उसके लिए सर्वत्र स्वर्ग ही स्वर्ग है। आनन्द, प्रेम, सद्व्यवहार ही उसे चारों ओर उमड़ता हुआ दीखता है। उसके लिए इस लोक में या परलोक में कहीं भी नरक नहीं है। इसके विपरीत जिसका दृष्टिकोण निकृष्ट है, नीति और नीयत अच्छी नहीं है, भावनाएँ संकुचित हैं, उसके लिए नरक का दावानल ही चारों ओर जल रहा है। उसे न तो इस लोक में सन्तोष है और न परलोक में ही रहेगा। नरक उसके हृदय में भरा हुआ है, इसलिए जहाँ कहीं भी वह जायेगा, छाया की तरह नरक उसके पीछे-पीछे लगा फिरेगा। सब लोग उसे धोखेबाज, दुष्ट, सताने वाले और स्वार्थी दिखाई देंगे।

उपर्युक्त पंक्तियों में हमारा तात्पर्य यह बताने का है कि अपनी विचारधारा और मानसिक अवस्था के ऊपर संसार का प्रिय और अप्रिय होना निर्भर है। इसलिए हम अपने जीवन को जैसा बनाना चाहते हैं, स्वेच्छापूर्वक बना सकते हैं। जिन परिस्थितियों में हम रहना चाहते हैं, जो वस्तुएँ प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें निःसन्देह प्राप्त किया जा सकता है। इस प्राप्ति का सर्वप्रधान उपाय यह है कि अपने आपको अनुकूल बनायें, अपने अन्दर वह बल, योग्यता और आकर्षण पैदा करें, जिसके द्वारा इच्छित वस्तुओं को प्राप्त किया जा सके।

किसी वस्तु को प्रचुर मात्रा में प्राप्त करने और उसे अधिक समय तक टिकाये रखने के लिए व्यक्तिगत विशेषताओं की आवश्यकता है। किसी की कृपा से कुछ सुख-सुविधा प्राप्त हो भी जाए तो वह न तो अधिक समय ठहरती है और न ही वह उसकी उन्नति में सहायक होती है, वरन् उल्टी विपत्ति में फँसा देती है। दुर्गुणी मनुष्य को यदि कहीं से एक लाख रुपया अनायास ही मिल जाए तो वह उसे फैशन-परस्ती आदि दुष्कर्मों में थोड़े ही समय में फूँककर बराबर कर देगा। तब उस रुपये से जितना सुख उठाया था, उसकी अपेक्षा अनेकों गुना दुःख, शोक उसके पल्ले बँध जायेगा। वह धन उस दुर्गुणी मनुष्य की भीतरी और बाहरी अशान्ति का ही कारण बनेगा।

एक उत्तम प्रकृति का, भले स्वभाव का आदमी छोटे घर में पैदा होकर भी अपने सद्गुणों के कारण लोगों के हृदयों में अपने लिए स्थान प्राप्त करता है। वह रुपया कमाता है, यशस्वी होता है, प्रतिष्ठा प्राप्त करता है, चारों ओर से उस पर सहायता बरसती है, सच्चे मित्र उसके स्वभाव-सुगन्ध के कारण सदा उसके साथ रहते हैं। ऐसी प्रकृति के मनुष्य अपनी मामूली दशा में भी वह आनन्द और उल्लास प्राप्त करते हैं, जो बदमिजाज अमीरों को कभी स्वप्न में भी प्राप्त नहीं होता।

मनस्वी बनिए

सुखों की कुंजी लोग बाहर तलाश करते हैं। अमुक देवी-देवता, ग्रह-नक्षत्र, भूत-पलीत, जन्त्र-तन्त्र, राजा-रईस, सन्त-महन्त की कृपा से जो लोग अपने को सुखी बनाने की आशा करते हैं, वे भारी भूल में हैं। दुनिया में केवल एक ही शक्ति है जो मनुष्य का उत्थान या पतन करती है, वह है 'अपनी मानसिक स्थिति'। इसी महाशक्ति की कृपा से महत्ता प्राप्त होती है और इसी के श्राप से विनाश होता है। दूसरों की सहायता से हम अपनी इस शक्ति की उत्तमता के द्वारा स्थायी उन्नति कर सकते हैं, किन्तु ऐसा नहीं हो सकता कि हमारी अयोग्यताएँ जहाँ की तहाँ बनी रहें और अनायास ही सुख सौभाग्य प्राप्त हो जाय। चोरी, जुआ, बेईमानी जैसी अयोग्यताएँ होते हुए भी कोई व्यक्ति थोड़े समय में धनी बन सकता है, परन्तु स्मरण रहे वह धन उसे आन्तरिक सुख जरा भी न दे सकेगा, उल्टे उसे अशान्ति और क्लेश की जलती ज्वाला में धकेल देगा।

यदि आप चाहते हैं कि समाज में आपका आदर हो, हर जगह आपकी बात पूछी जाय, सर्वत्र आपकी प्रशंसा हो, सब लोग आपके ऊपर स्नेह रखें, सच्चे मित्रों और सहायकों की वृद्धि हो, स्वास्थ्य उत्तम रहे, बड़े-बूढ़े आशीर्वाद दिया करें और छोटे आज्ञा पालन में खड़े रहें, पत्नी प्राण के समान प्रिय समझे, समाज आपको अपना नेता माने, आपके चेहरे पर प्रसन्नता नाचती रहे, अन्तःकरण आनन्द में डूबा रहे, व्यापार आपका खूब चमके, ग्राहक आपको छोड़ना न चाहे, तो यह सब बातें आपको प्राप्त हो सकती हैं, निश्चय हो सकती हैं। हम शपथपूर्वक कहते हैं कि तीव्र इच्छा और दृढ़ साधना से उपर्युक्त सिद्धियों को प्राप्त करना मनुष्य के लिए बिल्कुल आसान है, हँसी खेल के समान है।

शास्त्र कहता है **'सत्यं सुखं संजयति'** सत् से सुख उपजता है। यदि आप अपने को सुखी बनाना चाहते हैं तो अपने अन्दर दृष्टि डालिए, बुराइयों का सुधार कीजिए, अपने में सद्गुण उत्पन्न कीजिए। 'स्व' को सँभालते ही 'पर' सँभल जाता है। दुनिया दर्पण है, इसमें अपनी ही शक्ल दिखाई पड़ती है। अपने गुण, कर्म, स्वभावों के अनुरूप प्रतिध्वनि की तरह ही हमें संसार से प्रत्युत्तर मिलता है।

सहृदयता एक विलक्षण विभूति

स्वभाव की उत्तमता में सहृदयता का बहुत ऊँचा स्थान है। अरस्तू का कथन है कि सच्चे अर्थों में मनुष्य वही कहा जा सकता है, जो सहृदय है। रूखापन, जीवन की सबसे बड़ी कुरूपता है। कई आदमियों की आत्मीयता का दायरा बहुत ही छोटा और संकुचित होता है। अपने अत्यन्त ही छोटे दायरे में स्त्री, पुत्र, तिजोरी, मोटर, मकान आदि में उन्हें थोड़ा रस जरूर होता है, बाकी की अन्य वस्तुओं के प्रति उनके मन में बहुत ही अनुदारतापूर्ण रुखाई होती है। कोई-कोई तो इतने कंजूस होते हैं कि अपने शरीर के अतिरिक्त अपनी छाया पर भी उदारता या कृपा नहीं दिखाना चाहते। इससे भी महाकंजूस अपनी आत्मा के साथ कृपा करना तो दूर, शरीर के साथ में भी उदारता दिखाना नहीं चाहते। अच्छे भोजन, अच्छे वस्त्र, अच्छे मकान आदि आवश्यक वस्तुओं में भी आवश्यकता से अधिक कठोरता करते हैं। ऐसे रूखे आदमी यह समझ ही नहीं सकते कि मनुष्य जीवन में कोई आनन्द भी है। उन्हें अपने रूखेपन के प्रत्युत्तर में दुनिया बड़ी रूखी, नीरस, कर्कश, खुदगर्ज, कठोर और कुरूप मालूम पड़ती है। रूखापन जीवन की बड़ी भारी कुरूपता है। रूखी मशीन में बड़ी आवाज होती है और पुर्जे जल्दी ही टूट जाते हैं। रूखे रेगिस्तान में कौन रहना पसन्द करेगा?

मनुष्य का अन्तःकरण रसिक है, कवि है, सौन्दर्य उपासक है, कला प्रिय है, प्रेममय है। हृदय का यही गुण है, सहृदयता का अर्थ कोमलता, मधुरता, आर्द्रता है। जिसमें यह गुण नहीं, उसे हृदयहीन कहा जाता है। हृदयहीन का तात्पर्य है जड़-पशुओं से भी नीचा। जिसने अपनी विचारधारा और भावनाओं को शुष्क, नीरस और कठोर बना रखा है, वह मानव जीवन के वास्तविक रस का आस्वादन करने से वंचित ही रहेगा। उस बेचारे ने व्यर्थ ही जीवन धारण किया और वृथा ही मनुष्य शरीर को कलंकित किया।

आनन्द का स्रोत सरसता की अनुभूतियों में है। परमात्मा को आनन्दमय कहा जाता है, क्यों? इसलिए कि वह सरस है, प्रेममय है। श्रुति कहती है-'रसौ वै सः' अर्थात्-वह परमात्मा रसमय है। भक्ति द्वारा, प्रेम द्वारा, परमात्मा की प्राप्ति करना सम्भव बताया गया है। निःसन्देह जो वस्तु जैसी हो उसको उसी प्रकार प्राप्त किया जा सकता है। परमात्मा दीनबन्धु, करुणासिंधु, रसिक बिहारी, प्रेम का अवतार, करुणानिधान, भक्त वत्सल है। उसे प्राप्त करने के लिए अपने अन्दर वैसी ही लचीली, कोमल, स्निग्ध, सरस भावनाएँ पैदा करनी पड़ती हैं। भगवान भक्ति के वश में हैं, जिनका हृदय कोमल है, भावुक है, परमात्मा उनसे दूर नहीं हैं।

प्रकृति की पाठशाला

आप अपने हृदय को कोमल, पसीजने वाला, दयालु, प्रेमी और सरस बनाइये। संसार के पदार्थों में जो सरसता का, सौन्दर्य का अपार भण्डार भरा हुआ है, उसे ढूँढ़ना और प्राप्त करना सीखिए। जड़ वस्तुओं पर दृष्टि डालिए। हर एक वस्तु अपने-अपने ढंग की अनूठी है। वह अपने कलाकार की अमर कीर्ति का अपनी मूकवाणी द्वारा बड़ी ही भावुक भाषा में वर्णन कर रही है। मखमल-सी घास, दूध के फेन से उज्ज्वल नदी-नाले, हँसते हुए पुष्प, खिलौनों से सुन्दर कीट-पतंगे, माता-सी दयालु गायें, भाई से साथी बैल, वफादार सेवक से घोड़े, स्वामिभक्त कुत्ते, जापानी खिलौनों से चलते-फिरते पक्षी आप अपने चारों ओर देख सकते हैं।

प्रकृति के कोमल दृश्यों का कवित्वमय भावुकता के साथ यदि आप निरीक्षण करें तो सौन्दर्य की अजस्र धाराएँ बहती हुई दिखाई देंगी। यह सुन्दर संसार आपके दिल की मुरझाई हुई कली को हरी कर देगा। भोले-भाले मीठी-मीठी बातें करते हुए बालक, प्रेम की प्रतिमाएँ देवियाँ, करुणामय मातृत्व की मूर्तियाँ-माताएँ, अनुभव, ज्ञान और शुभकामनाओं के प्रतीक-वृद्ध-जन। यह सब ईश्वर की ऐसी आनन्दमय विभूतियाँ हैं, जिन्हें देखकर मनुष्य का हृदय कमल के पुष्प के समान खिल जाना चाहिए।

मनुष्य अपनी कोमल भावनाओं को जैसे-जैसे जागृत करता जाता है, वैसे-वैसे ही उसे अमृत तत्व का रसास्वादन होने लगता है, जिनके लिए सच्चिदानन्द स्वरूप आत्मा इस हाड़-माँस के शरीर में रहने को रजामन्द हुआ है, उसने मनुष्य शरीर धारण किया है। जीवन की सार्थकता उन कोमल वृत्तियों की मधुरता का रसास्वादन करने में है।

यह देवत्व को जगाने की वेला है

नवरात्र में जप-अनुष्ठान के साथ अपने व्यक्तित्व में सेवा-संवेदना के भाव बढ़ाने के प्रयास भी किए जाने चाहिए

मैं भगवान से मिलने जाता हूँ

स्वामी रामकृष्ण परमहंस प्रतिदिन जंगल की ओर एक एकांत स्थान पर जाया करते थे। उन्हें रोज-रोज वहाँ जाते देख लोगों के मन में जिज्ञासा उठी, उन्होंने स्वामी जी से पूछ ही लिया कि वे कहाँ जाया करते हैं? उत्तर में स्वामी जी ने बड़ी सहजता से कहा, ''मैं अपने भगवान से मिलने जाया करता हूँ।''

लोगों ने बात मजाक में ले ली। उन्हीं में एक पादरी महाशय भी थे, जिन्हें लगा कि ये पाखण्डी हैं, इनके पाखण्ड का पर्दाफाश किया जाना चाहिए। असलियत जानने के लिए एक दिन उन्होंने चुपचाप स्वामी रामकृष्ण परमहंस का पीछा किया। देखा कि वे घने जंगल में एक झोंपड़ी में चले गए। पादरी महाशय की जिज्ञासा और बढ़ गई। आगे स्वामी जी क्या करते हैं, यह सब भी वे चुपचाप ऐसे देखते रहे, जिससे स्वामी जी को कुछ पता न चले।

पादरी ने देखा-स्वामी जी के झोंपड़ी में पहुँचते ही एक कोढ़ी, जिसके हाथ-पाँव के घावों पर पट्टियाँ बँधी थी, प्रसन्न हो गया। स्वामी जी ने उसकी पट्टियाँ खोलीं, घाव धोये, मरहम लगाया, फिर पट्टियाँ बाँधीं। तत्पश्चात् स्वामी जी ने उस दुखियारे को भोजन कराया और लौट आए। रोगी गद्गद हृदय से स्वामी जी को आशीर्वाद देता रहा।

इसी बीच पादरी महाशय ने कुछ अलौकिक अनुभूति की। उन्हें कुछ पल के लिए कोढ़ी में प्रभु यीशू नजर आए। विश्वास न हुआ तो आँखें मली, फिर भी दृश्य वही था। स्वामी रामकृष्ण परमहंस के कुटिया से बाहर आते ही पादरी उनके चरणों में गिर पड़े। बड़े भावविभोर होकर कहने लगे, ''आपने तो मुझे मेरे प्रभु के दर्शन करा दिए।''

एक दृष्टि से देखा जाय तो स्वामी रामकृष्ण परमहंस कोढ़ी में अपनी तरह ही ईश्वर का अंश देखते और उसकी सेवा करते थे, लेकिन दूसरी दृष्टि से देखा जाए तो ईश्वर कोटि की उनकी अंतरात्मा कोढ़ी व्यक्ति के साथ आत्मीयता की अनुभूति कराती और उसकी पीड़ा में सहभागी बनाती रही।

आत्मविकास की साधना से मानव में देवत्व के उदय के बिना 'कण-कण में ईश्वर का वास होना' एक कहावत ही रह जाती है। जब मानव के अंतःकरण में देवत्व का अवतरण होने लगता है तो उसे मानव ही नहीं, प्राणिमात्र के साथ आत्मीयता की अनुभूति होने लगती है। तब 'सेवा' काम नहीं रह जाता, मनुष्य का स्वभाव बन जाता है। परम वंदनीया माताजी ने भी कहा है, ''*अपने दिल में कसक हो, दूसरों का दुःख-दर्द खुद की पीड़ा बन जाए, तो सेवा मनुष्य का स्वभाव बन जाती है।*'' (वाङ्मय 1/10.18)

महानता का पर्याय है आत्मीयता

मानव में देवत्व के उदय का अर्थ है 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की भावना और 'परदुःख कातरता' का विकास। इसके साथ ही स्वभाव में सेवाभाव का समावेश होता जाता है और सेवाभाव के साथ ही जीवन क्रमशः उत्कृष्टता, महानता के उच्च सोपानों की ओर स्वतः ही अग्रसर होने लगता है। परम वन्दनीया माताजी, परम पूज्य गुरुदेव एवं अन्य महापुरुषों के जीवन को देखें-

बात पूज्य गुरुदेव, वंदनीया माताजी के घीया मण्डी में निवास के दिनों की है। बाजार में सामान खरीदते समय माताजी की नजर एक 20-22 वर्ष की विधवा स्त्री पर पड़ी। उसकी दयनीय स्थिति देखकर माताजी के हृदय की अबूझ भाषा गुलाब देवी नामक उस स्त्री तक पहुँच गई। माताजी उसे अपने घर ले आईं। पता चला कि वह बेसहारा अपने बच्चों के साथ एक टूटी-फूटी झोंपड़ी में रहते हुए किसी तरह दिन काट रही है। माताजी ने उसे अपना सहयोगी बना लिया, उसके बालक को स्कूल में भर्ती कराया।

गुलाब देवी का प्रारब्ध भोग बाकी था। वह अक्सर बीमार रहती थी, इसलिए माताजी स्वयं उसके बहुत से काम कर देती थीं। बाद के दिनों में उसे स्तन कैंसर हो गया। माताजी ने आगरा के अस्पताल में उसका इलाज कराया और हर प्रकार से सहायता की। बीमारी के दिनों में माताजी स्वयं उसके हाथ-पाँव की मालिश जैसे काम किया करती थीं। माताजी से मालिश कराना गुलाब देवी को अच्छा नहीं लगता था। रोकने का भरसक प्रयास करने पर भी जब सफल नहीं हो पाती तो वह रो पड़ती।

माताजी दुःखी गुलाब देवी के आँखों के आँसू पोंछती और समझातीं-तू क्यों रोती है? यह मैं तेरे लिए थोड़े ही करती हूँ। तू बीमार पड़ी है, यह देखकर मुझसे रहा नहीं जाता। जी तड़प उठता है, मन बेचैन रहता है, क्या करूँ और कुछ तो कर नहीं पाती, मालिश कर देती हूँ, तुझे खाना बनाकर देती हूँ तो मन को तसल्ली मिल जाती है।

आत्मीयता के विस्तार का नाम ही अध्यात्म है। जब अध्यात्म जीवन में उतरने लगता है तब जीव-चेतना परमात्मचेतना को छूने लगती है। विवेक जाग्रत् होता है और संकीर्णताओं के बंधन ढीले होते जाते हैं। तब ऐसे-ऐसे कार्य बड़े सहज भाव से होने लगते हैं, जिन्हें करने की एक सामान्य व्यक्ति कभी सोचता ही नहीं और सोचता भी है तो करने का साहस नहीं बटोर पाता।

देवत्व की भावना से ओतप्रोत व्यक्तित्व के कारण ही घर, परिवार और समाज के तमाम बंधन एवं विरोध के बावजूद एक छोटा-सा बालक (परम पूज्य गुरुदेव अपनी बाल्यावस्था में) घर की बीमार मेहतरानी 'छपको' की वेदना अनुभव करता है और उनकी सेवा करने पहुँच जाता है। घर से निकाल दिया गया, मिट्टी के बरतन में गिनती की रोटी दी जाने लगी, फिर भी वह अपना आधा भोजन छपको अम्मा को देता है और कई दिनों तक घर के बाहर चबूतरे पर रहकर भी उसकी सेवा-सुश्रुषा के लिए नियमित रूप से पहुँचता रहता है।

युवावस्था में परम पूज्य गुरुदेव से कसाई के हाथों बिके और अत्यंत कष्टपूर्ण स्थिति में बैलगाड़ी खींचते बूढ़े बैल का दर्द भी नहीं देखा गया। उन्होंने बैल को मुक्त कराया और गाड़ीवान की शर्त पर स्वयं उसकी जगह जुए में लगकर 10 कि.मी. बैलगाड़ी खींच कर ले गए।

परमात्मचेतना के सच्चे सामीप्य के कारण ही लाखों तीर्थयात्रियों में से एक संत एकनाथ प्यास से तड़पते एक गधे की प्यास बुझाने के लिए सैकड़ों कि.मी. की पैदल यात्रा कर भगवान रामेश्वरम के अभिषेक के लिए ले जाए जा रहे गोदावरी के जल को उसे पिला देते हैं, जबकि अन्य तथाकथित साधु-संत उसे अनदेखा कर मरने के लिए छोड़ आगे बढ़ जाते हैं। इसी देवत्व के वशीभूत होकर संत तुकाराम बच्चों की खुशी के लिए अपने सारे गन्ने उनमें बाँट देते हैं और घर जाकर अपनी पत्नी के कोप को हँसी-हँसी सह लेते हैं। विनोबा की माता इसी आत्मीयता के वशीभूत होकर सीमित साधनों में भी अपने बच्चे को सूखी रोटी और अतिथि स्वरूप आए पड़ोसी के बच्चे को घी से चुपड़ी रोटी खिलाने को अपना धर्म मानती हैं और इसमें सुख की अनुभूति करते हुए बेटे विनोबा को प्रेम एवं परोपकार की शिक्षा देती हैं।

अध्यात्म से जीवन का कायाकल्प

जीवन में आध्यात्मिक सिद्धियों के साथ परिस्थितियाँ बदलती चली जाती हैं। मनःस्थिति में आए बदलाव के कारण व्यक्ति का चिंतन, चरित्र और व्यवहार बदलने लगता है, जिसके प्रभाव से भविष्य की चिंता, क्लेश, तनाव जैसी परिस्थितियाँ और प्रतिकूलताएँ बहुत हद तक समाप्त होती जाती हैं या ऐसी समझदारी एवं सामर्थ्य विकसित होती जाती है कि उनका सहजता से सामना किया जा सके। परमात्मचेतना के सामीप्य से साधक के जीवन में दैवी अनुकम्पा और दिव्य संरक्षण भी प्राप्त होने लगते हैं।

अध्यात्म की सिद्धि और मनुष्य में देवत्व का अवतरण एक-दूसरे का पर्याय हैं। जैसे-जैसे मानव में देवत्व का उदय होता जाता है, वैसे-वैसे उसके जीवन में स्वर्ग की सृष्टि होती जाती है। भय, चिन्ता, क्लेश, तनाव, अविश्वास, आशंका यही तो सब नरक का कारण होते हैं। आध्यात्मिक व्यक्ति के जीवन से ये तिरोहित होते जाते हैं। निःसंदेह समाज में स्वर्ग के अवतरण के लिए श्रेष्ठ, सदाचारी, सद्भावपूर्ण नागरिकों की आवश्यकता है। हमारा युग निर्माण आन्दोलन ऐसे व्यक्तित्वों के निर्माण के लिए ही समर्पित और सक्रिय है, तथापि जिनके जीवन में देवत्व का अवतरण होगा उनका जीवन सबसे पहले स्वर्गोपम बनता जाएगा। मनुष्य में देवत्व के उदय के बिना स्वर्ग की सृष्टि संभव ही नहीं। चाहे कितनी भी सुख-सुविधाएँ क्यों न बढ़ जाएँ, कितने भी कानून और अनुशासन आ जायें, व्यक्ति नहीं बदलेंगे तो उनके दुरुपयोग की संभावनाएँ बनी रहेंगी और, समाज की सच्ची उन्नति संदिग्ध ही रहेगी।

नवरात्र साधना के संदर्भ में

ऋतु संध्या में आई नवरात्रियों को साधना के लिए अत्यंत अनुकूल समय माना जाता है। साधक भाव वाले अधिकांश लोग इन दिनों में अपनी सामर्थ्य के अनुसार कोई न कोई अनुष्ठान करते हैं। सभी की अपनी-अपनी मनोकामनाएँ होती हैं, संकल्प और लक्ष्य होते हैं, लेकिन युग देवता की पुकार और समय की माँग है कि साधना काल की इस अनुकूलता का लाभ उठाते हुए जीवन में देवत्व के अवतरण की साधना भी अवश्य की जानी चाहिए।

साधना का अपना विज्ञान है, अनुष्ठान की अनेक विधियाँ हैं। कोई गायत्री साधना अनुष्ठान करता है, कोई दुर्गा सप्तशती का पाठ करता है, कहीं माँ अम्बे की भक्ति की जाती है तो कुछ लोग भगवान राम को अपना आदर्श मानते हुए विशेष आराधना-अनुष्ठान करते हैं। जगह-जगह रामलीलाओं का मंचन होता है। तंत्र साधना के साधक अपनी तरह से साधनाएँ करते हैं। हर प्रकार की साधनाओं की अलग-अलग सिद्धियाँ हैं। मंत्र जप, एकाग्रता, ध्यान, चिन्तन, मनन का प्रभाव होता ही है। व्रत, उपवास, संयम से स्वास्थ्य सधता है और मन पवित्र होता है।

साधना तो विद्यार्थी भी करते हैं और परीक्षा परिणाम के रूप में उसकी सफलता और सिद्धि मिलती है। वैज्ञानिकों की साधना से तरह-तरह के आविष्कार होते हैं। लेकिन बात जब आध्यात्मिक साधना की हो तो आत्मपरिष्कार पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। अपने व्यक्तित्व में देवत्व के विकास का लक्ष्य जरूर शामिल किया जाना चाहिए। अनुष्ठान काल में जप संख्या पूरी कर लेना ही पर्याप्त नहीं है, साधना की सफलता इसमें है कि हमारे व्यक्तित्व और विचारों में आदर्शों के प्रति निष्ठा बढ़े, पवित्रता एवं प्रखरता का संचार हो। अपने भीतर बैठे आत्मदेव को प्रसन्न किए बिना किसी भी इष्टदेव को मनाना कठिन है। भीतर का देवता जाग गया तो मानवमात्र में, प्राणिमात्र में ईश्वर का वास नजर आएगा।

संवेदना जगाएँ, सेवाधर्म अपनाएँ

जब जीवन में आध्यात्मिकता का समावेश होता है तो सेवाभाव स्वतः ही विकसित होता जाता है। उसी प्रकार मनुष्य में देवत्व का उदय करना हो तो सेवा ही सर्वोत्तम साधना है। साधना की सिद्धि के लिए संवेदना जगाने और सेवाधर्म अपनाने के प्रयास किए जाने चाहिए। अपने अनुष्ठान के विधि-विधानों में सेवा और सद्भाव को जोड़ लेना चाहिए। इससे सुनिश्चित रूप से साधना के बेहतर परिणाम मिलेंगे। क्या किया जा सकता है, कुछ संकेतों से जानें-

- साधना अनुष्ठान माँ गायत्री, दुर्गा, अम्बे, काली आदि को इष्ट मान कर किए जाते हैं। अनुष्ठान काल में मातृशक्ति के प्रति हम वैसा ही सम्मान रखें। हर नारी में अपने इष्ट की छवि देखने का प्रयास किया जाए। घर में माता, बहिन, पत्नी, बेटी सभी को यथोचित सम्मान प्रदान करते हुए उनके साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार किया जाए। यदि कोई मतभेद हो तो अपनी बात को प्रतिष्ठा और अहंकार का विषय न बनाते हुए उनके पक्ष को समझने व परिवार में प्रेम और सामंजस्य बढ़ाने का प्रयास किया जाए।
- समाज में हर बहिन-बेटी का सम्मान करने, उन्हें आदर के भाव से देखने और उनकी रक्षा करने का संकल्प लिया जाए।
- मांसाहार जीवों के प्रति असंवेदनशीलता है। प्राणिमात्र के प्रति आत्मीयता का विस्तार करते हुए मांसाहार न करने का संकल्प लिया जाए।
- प्लास्टिक की थैलियाँ गौमाता की मौत और बीमारी का बड़ा कारण है। इनका प्रयोग न करने का संकल्प लिया जा सकता है।
- जिस देश में करोड़ों लोग भुखमरी का शिकार हों, वहाँ के निवासियों का भोजन के समय जूठन छोड़ना पाप है। इस पाप से बचने का संकल्प लेना चाहिए।
- प्रकृति, पर्यावरण एवं जैव विविधता की रक्षा के लिए जागरूकता अपनाई और बढ़ाई जाए।
- अनुष्ठान काल में बुजुर्गों की सेवा और सम्मान को वरीयता दी जाए। संभव हो तो किसी वृद्धाश्रम में जाकर बुजुर्गों की व्यथा-वेदना सुनी जाए और उसे दूर करने में सहयोग किया जाए। उन्हें हँसी-खुशी का वातावरण प्रदान किया जाए।
- अस्पतालों में पहुँकर मरीजों, जरूरतमंदों की सेवा, सहायता की जाए, उनका हौंसला बढ़ाया जाए।
- पीड़ित मानवता और सरहदों की सुरक्षा कर रहे सैनिकों के प्रति संवेदना जताते हुए रक्तदान, अंगदान जैसे पवित्र कार्य किए जायें या संकल्प लिए जाएँ।
- किसी जरूरतमंद की सहायता के प्रयास हों।

परमात्मा से मनुष्य को सुर-दुर्लभ जीवन का उपहार मिला है। समझदारी इसी में है कि इसे सांसारिक समस्याओं के मकड़जाल में उलझे रहने देने की अपेक्षा जीवन की गरिमा के अनुरूप जिया जाए। समझदारी के साथ ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी अपनाते हुए श्रेष्ठता के वरण के लिए प्रभावशाली कदम बढ़ाये जाएँ। ऊपर सुझाए गए कार्य संकेत मात्र हैं। ऐसे प्रयोगों से जीवन में देवत्व का अवतरण होगा तो निश्चित ही वह जीवन को सार्थकता प्रदान करेगा। अतः नवरात्र में अपने साधना अनुष्ठान में भीतर के देवत्व को जगाने का प्रयास अवश्य करें। यही सच्चा यज्ञीय भाव है, जो गायत्री साधना का अनिवार्य चरण है।

वृक्षारोपण एवं सत्प्रवृत्ति संवर्धन के लिए चल रहे हैं प्राणवान अभियान

युवा प्रकोष्ठ को समाज सेवा के लिए मिला सर्वोच्च शिखर सम्मान

वृक्षारोपण अभियान के लिए समर्पित जहानाबाद के युगसृजेताओं की टोली, बायें वृक्षारोपण की तैयारी और दायें सम्मान ग्रहण करते युवक

जहानाबाद। बिहार

प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ ने अपने 66वें रविवासरीय साप्ताहिक वृक्षारोपण कार्यक्रम के अंतर्गत दिनांक 4 सितम्बर को स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स जहानाबाद में 51 पौधे रोपे। वृक्षारोपण अभियान के संयोजक श्री रंगेश कुमार ने बताया कि इन 66 सप्ताहों में उनके दल द्वारा लगभग सात हजार पौधे लगाए जा चुके हैं। न्यायालय, जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं अन्य न्यायाधीश, अनुमंडल पदाधिकारी आदि के आवासीय परिसर, मंडल कारा, थाना, प्रखंड कार्यालय, बाल पर्यवेक्षण सुधार गृह, उच्च एवं मध्य विद्यालय, निजी शिक्षण संस्थान तथा निजी भूमि पर वृक्षारोपण के कार्यक्रम आयोजित किए गए।

अपने साप्ताहिक रविवासरीय पौधारोपण अभियान के अन्तर्गत 66 सप्ताहों में लगाई 7000 वृक्षों की पौध

ज्ञात हो कि प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ में करीब एक सौ से अधिक सक्रिय पुरुष एवं महिला सदस्य हैं, जो वृक्षारोपण के अलावा मण्डल कारा, कोचिंग संस्थान, विद्यालय आदि में व्यक्तित्व परिष्कार सम्बन्धी प्रेरणाओं से ओतप्रोत कार्यक्रम आयोजित करते रहते हैं। नगर स्थित श्रीकृष्णा गार्डन में समाज सेवा के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ को सर्वोच्च शिखर सम्मान 2022 से सम्मानित किया गया। वृक्षारोपण टीम को बिहार सरकार के मंत्री श्री संतोष कुमार सुमन एवं जहानाबाद के विधायक सुदय यादव के द्वारा मोमेंटो एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

वृक्ष काँवड़ यात्रा से पर्यावरण संरक्षण का संदेश

कासगंज। उत्तर प्रदेश

जनपद कासगंज के समस्त कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से कासगंज में पर्यावरण संरक्षण का अत्यंत प्रभावशाली कार्यक्रम हुआ। 28 अगस्त को लगभग 700 कार्यकर्त्ताओं ने मिलकर नगर में विशाल वृक्ष काँवड़ यात्रा निकाली। जिला समन्वयक श्री उमेश चंद्र यादव के अनुसार इसमें 250 काँवड़ों में 500 पौधों की शोभायात्रा निकाली गई।

यात्रा गंगा देवी धर्मशाला से आरम्भ होकर नगर के प्रमुख मार्गों से होकर गुजरी। पर्यावरण संरक्षण का संदेश देती 100 तख्तियाँ, ओजस्वी नारे और विचार क्रान्ति की 450 ध्वजाओं ने इसे आकर्षक बनाया। काँवड़ यात्रा के दरम्यान नगरवासियों में लगभग 900 वृक्षों की पौध बाँटी गई, प्राप्तकर्त्ताओं से उनके संरक्षण-पोषण का आश्वासन भी लिया गया।

50 पौधे रोपे

खूंटी, राँची। झारखण्ड

गायत्री परिवार खूंटी के युवा प्रकोष्ठ द्वारा 4 सितम्बर को सोसोटोली ग्राम में पौधा रोपण किया गया। इस कार्यक्रम में श्री फणीन्द्र कश्यप की बाड़ी में रक्त चंदन, आँवला, हरड़, बहेड़ा, चंपा, अशोक, पपीता, अनार, महोगुनी आदि के 50 पौधे रोपे गए। खूंटी शाखा द्वारा इस वर्ष किया गया लगातार वृक्षारोपण का

यह तीसरा साप्ताहिक रविवासरीय कार्यक्रम था। धनंजय महतो, रीता मेहता, ब्यूटी मिश्रा, बालमुकुंद कुमार कश्यप आदि ने इस कार्यक्रम में सक्रिय भूमिका निभाई।

माता बिजासन और माता भवानी की पहाड़ियों पर हुए तरुपुत्र महायज्ञ, रोपी 101 वृक्षों की पौध

वर्ष-दर-वर्ष की सक्रियता से हरीभरी हो रही हैं पहाड़ियाँ

देवास। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार देवास इस मौसम में पाँच हजार पौधों के रोपण के लक्ष्य के साथ निरंतर पौधारोपण अभियान चला रहा है। इसी कड़ी में आठवें सामूहिक पौधारोपण कार्यक्रम में ग्राम टिनोनिया की पहाड़ी पर माता बिजासन के चरणों में फलदार और छायादार पौधे रोपे गए। इंदौर के श्री त्रिलोक सोलंकी के नेतृत्व में देवास और इंदौर के परिजनों ने यह वृक्षारोपण कार्यक्रम सम्पन्न कराया।

श्री विक्रम सिंह चौधरी के अनुसार इंदौर और देवास के कार्यकर्त्ताओं द्वारा प्रतिवर्ष इस पहाड़ी पर वृक्षारोपण किया जाता है। विगत वर्षों की सक्रियता के प्रभाव से आज पूरी पहाड़ी वृक्षों से हरी-भरी दिखाई देती है।

माता भवानी की पहाड़ी पर

इससे पूर्व देवास शाखा ने अपना छठा तरुमित्र रोपण महायज्ञ देवास से लगभग 20 किलोमीटर दूर सुतारखेड़ा गाँव की माता भवानी पहाड़ी पर आयोजित किया। गाँववासियों ने इसमें भाग लेते हुए बड़ी श्रद्धा के साथ 101 वृक्षों के पौधे रोपे एवं उनके संरक्षण का संकल्प लिया। वहाँ औषधीय महत्त्व के, छायादार एवं फलदार पौधे रोपे गए। इस तरुमित्र महायज्ञ में स्थानीय विधायक श्री मनोज चौधरी एवं सरपंच श्री अजय पटेल सहित गणमान्य नागरिक शामिल हुए।

गायत्री शक्तिपीठ के प्रतिनिधि श्री विक्रमसिंह चौधरी ने बताया कि तरुमित्र रोपण महायज्ञ के पूर्व गाँव में वृक्षगंगा अभियान के प्रति जागरूकता लाने हेतु रैली भी निकाली गई थी। विधायक महोदय ने गायत्री परिवार द्वारा जनमानस को बदलने के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की।

बायें ग्राम टिनोनिया में माता बिजासन की पहाड़ी पर और दायें सुतारखेड़ा गाँव में चल रहा तरुपुत्र रोपण महायज्ञ

पशुबलि एवं धर्मान्तरण रोकने के लिए ग्राम पंचायत प्रस्ताव पारित करेगी

गायत्री परिवार की संगोष्ठी में सहमति बनी

भाटापारा, बलौदाबाजार। छत्तीसगढ़

भाटापारा के मावली मंदिर, सिंगारपुर में दिनांक 21 अगस्त को रायपुर उपजोन के अन्तर्गत बलौदाबाजार, रायपुर, गरियाबंद, धमतरी एवं महासमुंद जिलों के कार्यकर्त्ताओं की त्रैमासिक समीक्षा संगोष्ठी सम्पन्न हुई। छत्तीसगढ़ जोन समन्वयक श्रीमती आदर्श वर्मा एवं विभिन्न आन्दोलनों की प्रान्तीय समन्वयक/संगठन प्रभारी श्रीमती सरला कोसरिया, श्री सी.पी. साहू, श्री मनहरण लाल साहू, श्री रामूराम साहू सहित सैकड़ों कार्यकर्त्ता इस गोष्ठी में सम्मिलित हुए। सिंगारपुर के सरपंच और गाँव के प्रतिष्ठित लोगों ने भी भाग लिया।

गायत्री परिवार की संगोष्ठी को सम्बोधित करते सिंगारपुर गाँव के सरपंच

इस संगोष्ठी में जोन समन्वयक श्रीमती आदर्श वर्मा ने सभी प्रबुद्ध नारियों से युग के नवसृजन अभियान में हर संभव योगदान देने का आग्रह किया। उन्होंने अपनी संस्कृति के उदात्त स्वरूप को जन-जन तक पहुँचाने, पिछड़ों को प्यार और प्रोत्साहन देने की आवश्यकता पर बल दिया, ताकि धन के लोभ में सांस्कृतिक पलायन, धर्मान्तरण जैसी घटनाओं को रोका जा सके।

मावली माता मंदिर पर संगोष्ठी के प्रासंगिक संदर्भ में बलिप्रथा जैसी कुप्रथाओं के विरुद्ध अभियान सम्बन्धी चर्चा भी हुई। गोष्ठी में मंदिर के मुख्य पुजारी श्री राधेश्याम ध्रुव भी उपस्थित थे। उन्होंने आश्वस्त किया कि अब से इस मंदिर परिसर में पशुओं को बलि हेतु प्रवेश नहीं दिया जाएगा। सरपंच श्री रामूराम साहू ने अपनी पंचायत के सभी प्रतिनिधियों एवं मावली मंदिर समिति के सदस्यों के बीच सामंजस्य स्थापित कर पशुबलि पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाने का प्रस्ताव पारित करने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि धर्मांतरण पर रोक लगाये जाने हेतु प्रस्ताव भी पारित किया जाएगा।

सिंगारपुर ग्रामवासियों के प्रगतिशील प्रयासों का करतल ध्वनि से स्वागत किया गया। गोष्ठी में परम्परानुसार विभिन्न आन्दोलनों को गति देने के सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा हुई।

अथक पुरुषार्थ से वनवासी क्षेत्र में हुई श्रीराम स्मृति उपवन की स्थापना

शिरपुर, धुलिया। महाराष्ट्र

युवा प्रकोष्ठ शिरपुर के अथक प्रयासों से पावरा वनवासी बहुल क्षेत्र शिरपुर में श्रीराम स्मृति उपवन निर्माण का सपना साकार हुआ। लगातार तीन माह तक जनसंपर्क के बाद लोगों को वृक्षारोपण एवं उनके संरक्षण के लिए तैयार किया गया। तत्पश्चात् तरुपुत्र यज्ञ के अनूठे और अविस्मरणीय कार्यक्रम में 151 वृक्षों की पौध लगाई गई। भावों से भरे इस तरुपुत्र महायज्ञ को रेखा भगत और नीलिमा ठाकुर ने संपन्न कराया। यह स्मृति उपवन कोरोना काल में दिवंगतों की स्मृति में बनाया गया है।

जल, जमीन एवं जंगल ही वनवासियों की पहचान है। इसके बावजूद क्षेत्र में घटता वन क्षेत्र चिंता का विषय रहा। कई बार के प्रयासों के बाद भी पंचायत द्वारा वृक्षारोपण का कार्यक्रम सफल नहीं हो सका। इसे देखते हुए गायत्री परिवार के युवा कार्यकर्त्ता

कोरोना काल में दिवंगतों के स्वजनों ने बनाए उनके वृक्ष स्मारक

दीपांशु जायसवाल, कुणाल भावसार ने गाँव के सरपंच और ग्राम सेवक को अपनी तरुपुत्र महायज्ञ योजना से अवगत कराया। कोरोना काल में दिवंगत आत्माओं को अपने स्वजनों के वृक्ष-स्मारक बनाने के लिए सहमत किया। इस कार्य में टीसीएस कम्पनी से जुड़ी गायत्री परिवार की युवा कार्यकर्त्ता सुश्री जसुली पारीक ने अहम् भूमिका निभाई।

कार्यक्रम की भव्यता और सफलता देखकर गाँव के सरपंच द्वारा इस क्षेत्र में 500 अन्य वृक्षों का रोपण किया गया तथा भविष्य में स्थायी जल की व्यवस्था, सोलर एवं ड्रिप सिंचाई की व्यवस्था पंचायत की ओर से करवाने का आश्वासन दिया गया। वृक्षारोपण अभियान को प्रोत्साहित करने में पत्रकार बंधुओं का भी शानदार सहयोग मिला।

पूर्वजों की पावन स्मृति में रक्तदान शिविर

111 लोगों ने रक्तदान किया

गम्हरिया, सरायकेला। झारखण्ड

सरायकेला जिले के युवा प्रकोष्ठ द्वारा स्व. भोलानाथ चौधरी की प्रथम पुण्य तिथि पर गम्हरिया में छठा राज्य स्तरीय रक्तदान शिविर आयोजित हुआ। इसका शुभारंभ वरोडा ट्रांसपोर्ट के मालिक श्री रवि चौधरी द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। शिविर में कुल 111 यूनिट रक्त संग्रह हुआ। इस कार्यक्रम में राजू चौधरी, राजू गिरी, गणेश चौधरी एवं

सरायकेला जिला प्रतिनिधि श्री सत्यप्रकाश, दिवाकर गोप आदि ने विशेष दायित्व निभाए।

मनुष्य की प्रत्येक भूल उसे बहुत कुछ सिखा देती है, यदि वह सीखना चाहे।

नारी सशक्तीकरण वर्ष में बहिनों में बढ़ता आत्मविश्वास एवं युवा उत्कर्ष के प्रयास

माँ की पाठशाला

महाराष्ट्र में महिला मण्डल ने एक वर्ष में ऑनलाइन आयोजित किए 225 कार्यक्रम

नागपुर। महाराष्ट्र

'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान के अन्तर्गत महाराष्ट्र की प्रान्तीय इकाई ने एक अत्यंत प्रभावशाली कार्यक्रम 'माँ की पाठशाला' का आयोजन कर गर्भस्थ शिशु के समग्र विकास एवं नारी सशक्तीकरण अभियान में एक नया अध्याय लिखा है। इस कार्यक्रम में बहिनों को न केवल गर्भ विज्ञान और शिशु के समग्र विकास सम्बन्धी जानकारियाँ दी गईं, बल्कि बहिनों के चिन्तन एवं व्यवहार को रचनात्मक बनाए रखने के लिए नित्य नए-नए प्रेरणादायी प्रयोग-प्रशिक्षण भी हुए।

प्रान्तीय समन्वयक श्रीमती उमा सुभाष शर्मा के अनुसार ऑनलाइन पाठ्यक्रम माँ की पाठशाला का शुभारम्भ 15 अगस्त 2021 को शान्तिकुञ्ज में आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी आन्दोलन की संयोजिका डॉ. गायत्री शर्मा द्वारा किया गया था। उस दिन से प्रतिदिन सोमवार से शुक्रवार दोपहर 4 से 5.30 बजे विविध कार्यक्रम आयोजित किये गये, जिसमें प्रतिदिन औसतन 70- 80 गर्भवती बहनें भाग लेती रहीं। 21 अगस्त 2022 को इस कार्यक्रम का एक वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्य में डॉ. गायत्री शर्मा की अध्यक्षता में विशेष गोष्ठी हुई। महाराष्ट्र के चारों उपजोन नागपुर, जलगाँव, पुणे एवं मुम्बई के कार्यकर्त्ताओं ने इसमें भाग लिया तथा आगामी दिनों में इस कार्यक्रम को अधिक व्यापक एवं प्रभावशाली बनाने के लिए नए सिरे से जिम्मेदारियाँ निर्धारित कीं।

आओ गढ़े संस्कारवान पीढ़ी

बहिनों के चिन्तन एवं व्यवहार को रचनात्मक बनाए रखने के लिए नित्य नए-नए प्रेरणादायी प्रयोग

प्रत्येक सोमवार से शुक्रवार दोपहर 4 से 5 .30 बजे

प्रतिदिन 70-80 बहिनों की भागीदारी

अनेक रचनात्मक गतिविधियाँ

श्रीमती उमा शर्मा के अनुसार इन दैनिक कक्षाओं में अनेक विशेषज्ञों के ज्ञान एवं अनुभव का लाभ गर्भवती बहिनों को मिलता है। गर्भवती का आहार, उसकी दिनचर्या, गर्भ संवाद, गर्भ पुष्टि यज्ञ, जप तथा यज्ञ, ध्यान-प्राणायाम जैसे विषयों पर उद्बोधन-मार्गदर्शन दिया जाता है। बहिनों में सकारात्मकता, सृजनात्मकता, उत्कृष्ट चिन्तन, आदर्शों के प्रति आस्था संवर्धन आदि के लिए विशेष प्रयोग भी किए जाते हैं।

विगत एक वर्ष में श्रीमद् भगवद् गीता की कक्षाएँ ली गईं। वैदिक गणित की पहेलियाँ, दिमागी खेल, प्रज्ञागीत, श्लोक पाठ, राखी एवं गणेश मूर्ति बनाना, फ्लावर पॉट की सजावट, सिलाई-बुनाई, वृक्षारोपण जैसे कई कार्यक्रम चलाए गए। कक्षा में शामिल बहिनों ने इन विषयों पर परीक्षाएँ भी दीं। नवरात्र में विशेष साधना अनुष्ठान कराए गए।

कुल मिलाकर गर्भवती बहिनों के सतत मार्गदर्शन के साथ उनके दृष्टिकोण को सृजनात्मक-सकारात्मक बनाए रखने का प्रयास किया गया, जिसका लाभ उनको और उनके शिशुओं को मिलना अवश्यंभावी है। दूसरे वर्ष में महाराष्ट्र का प्रान्तीय संगठन इसे और प्रभावी बनाने जा रहा है।

उदयपुर और खरगोन में आयोजित उपजोन स्तरीय प्रशिक्षण सत्रों को सम्बोधित करती शान्तिकुञ्ज की ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोलियाँ

अत्यंत उपयोगी और लोकप्रिय हैं नारी सशक्तीकरण प्रशिक्षण सत्र

उदयपुर। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ उदयपुर में 8 से 11 सितम्बर 2022 की तिथियों में नारी सशक्तीकरण प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। इसमें उदयपुर संभाग में नारी जागरण का शंखनाद कर रही 50 बहिनों एवं 20 भाइयों ने भाग लिया। शिविर संचालन के लिए शान्तिकुञ्ज से सुश्री दीना त्रिवेदी के नेतृत्व में ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोली पहुँची थी।

8 सितम्बर को शिविर का शुभारम्भ सुश्री दीना त्रिवेदी के साथ स्थानीय अग्रणी परिजन सुषमा जोशी, फतह कुंवर सनाढ्य, ललित पानेरी, कैलास व्यास ने दीप प्रज्वलन कर किया। इस अवसर पर उन्होंने आशा व्यक्त की कि मिशन के नारी सशक्तीकरण वर्ष में संभाग की बहिनें राष्ट्रीय अभियान के साथ जुड़कर मेवाड़ के गौरवशाली इतिहास में एक नया अध्याय रचेंगी।

खरगोन। मध्य प्रदेश

वृक्षतीर्थ मेहरजा में सम्पन्न नारी सशक्तीकरण प्रशिक्षण शिविर में शान्तिकुञ्ज की टोली ने कन्या कौशल अभिवर्धन, बेटी संरक्षण, नारी उत्कर्ष, शिक्षा, अन्धविश्वास-रूढ़ियों के उन्मूलन जैसी अनेक सामाजिक आवश्यकताओं पर मार्मिक संदेश दिया। श्रीमती शकुन्तला साहू, श्रीमती कौशल्या यादव एवं श्रीमती उमा गढ़िया की टोली ने सामाजिक परिवर्तन के मार्मिक विषयों पर संदेश के साथ क्षेत्रीय समयदानी बहिनों को यज्ञ-संस्कार का कर्मकाण्ड सिखाया एवं युग संगीत का प्रशिक्षण भी दिया। अनेक रचनात्मक कार्यों के विषय में जानकारी देते हुए उन्हें आन्दोलन स्तर पर क्रियान्वित करने में बहिनों से बढ़-चढ़कर भागीदारी करने का अनुरोध किया।

शक्ति प्राप्त करने के लिए आद्यशक्ति की उपासना करें।

- **शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि**

(खरगोन के शिविर में दिया संदेश)

शिविर में खरगोन, खण्डवा, बुरहानपुर एवं बड़वानी जिलों की बहिनें शामिल थीं। शिविर संचालन सुनीता देवी पाटीदार ने किया। उप जोन खण्डवा के प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री पन्नालाल बिरला, लक्ष्मण पटेल, कृष्णराव शर्मा आदि सभी के सहयोग से नारी सशक्तीकरण के प्रयासों को शानदार सफलता मिली।

इन्दौर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ केशर बाग, इन्दौर में दिनांक 26 से 29 अगस्त 2022 की तिथियों में नारी सशक्तीकरण प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। धार, झाबुआ, देवास, खण्डवा व इन्दौर जिलों से आई 150 कर्मठ कार्यकर्त्ता बहिनों ने इसका लाभ लेते हुए यज्ञ, कर्मकाण्ड, संस्कार, संगीत, संभाषण आदि विधाओं का प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण देने शान्तिकुञ्ज से ब्रह्मवादिनी बहिन श्रीमती शकुंतला साहू, कौशल्या यादव एवं उमा गढ़िया की टोली पहुँची थी।

श्रीमती शकुंतला साहू ने कहा कि भारत के सनातन सांस्कृतिक गौरव की पुनः प्रतिष्ठा के लिए नारी को अपनी प्राचीन पहचान के अनुरूप सशक्त और संस्कारवान होना होगा। नारी समाज को नेतृत्व प्रदान कर सांस्कृतिक समृद्धि के शिखर तक पहुँचाने में सक्षम है। उन्होंने कहा कि नारी अबला नहीं है, वह अपनी क्षमताओं और संभावनाओं को भूली हुई है। उसे शक्ति प्राप्त करने के लिए आद्यशक्ति गायत्री की उपासना करनी चाहिए।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि श्रीश्री विद्याधाम के बाल ब्रह्मचारी प्रशांत अग्निहोत्री महाराज थे। उन्होंने प्रशिक्षण लेने वाली महिलाओं को सम्मान पत्र प्रदान किया। उन्होंने बहिनों को युगशक्ति गायत्री की प्रखर प्राण चेतना से जन-जन को अनुप्राणित करने का आह्वान किया।

शिविर की सफलता में शक्तिपीठ के मुख्य प्रबन्ध ट्रस्टी श्री सजल तिवारी, श्री राधेश्याम कासट, उपजोन प्रभारी श्री जे.पी. यादव ने अपने दायित्वों का उत्कृष्टतापूर्वक निर्वहन करते हुए बहिनों का पथ प्रदर्शन किया।

चिकित्सकों के सहयोग से अस्पतालों में कराए जा रहे हैं सामूहिक गर्भ संस्कार समारोह

सतना। मध्य प्रदेश

दिनांक 29 अगस्त 2022 को सतना के बिरला हॉस्पिटल में 15 बहिनों का सामूहिक गर्भ संस्कार समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर संस्कार कराने वाली बहिनों का विस्तार से मार्गदर्शन किया गया। उन्हें सुशील, संस्कारवान संतान की प्राप्ति के लिए गायत्री उपासना, सूर्य का ध्यान, सात्विक भोजन, गर्भ संवाद जैसी दैनिक क्रियाएँ समझाई गईं। बहिनों को बालक के जन्म के बाद नामकरण, अन्नप्राशन, मुण्डन आदि संस्कार भी गायत्री परिवार की प्रगतिशील प्रेरणाओं के साथ कराने का निवेदन किया गया। गायत्री चालीसा, मंत्र लेखन पुस्तिका, अखंड ज्योति पत्रिका आदि साहित्य भी भेंट स्वरूप दिया गया। इस आयोजन में सुश्री पुष्पलता ने विशेष सहयोग प्रदान किया।

सतना के हंसराज अस्पताल में हो रहा है गर्भवती बहिनों का सामूहिक संस्कार

दिनांक 5 सितंबर को सतना के हंसराज हॉस्पिटल में इसी तरह का एक कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें 10 बहिनों का गर्भ संस्कार कराया गया। डॉ. मनीषा सोनी ने स्वयं गर्भवती बहनों को यह संस्कार कराने के लिए प्रेरित किया था।

दिनांक 6 सितंबर 22 को सतना के ही डॉ. दीपमाला हॉस्पिटल में सात बहिनों का गर्भ संस्कार कराया गया। डॉ. दीपमाला जी ने इस कार्यक्रम को सराहा तथा संस्कार कराने वाली बहिनों को संबंधित पुस्तकें, मंत्र लेखन पुस्तिका, चालीसा, बलिवैश्व किट, स्टिकर आदि भेंट किए।

कल्याण कॉलेज में डिवाइन वर्कशॉप

विद्यार्थियों को आत्मशक्तियों का बोध कराने के साथ उन्हें अपने सामाजिक-राष्ट्रीय कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक करता है 'दिया छत्तीसगढ़'

दुर्ग। छत्तीसगढ़

पिछले कई वर्षों से स्कूल-कॉलेजों में विद्यार्थियों को आध्यात्मिक मार्गदर्शन देकर उन्हें मानवता का पाठ पढ़ा रहे युवा संगठन दिया, छत्तीसगढ़ ने 6 सितंबर को कल्याण कॉलेज के ऑडिटोरियम में 'डिवाइन वर्कशॉप' का आयोजन किया गया। डॉ. पी. एल. साव ने युवाओं को भागदौड़ वाली दुनिया में भीड़ का हिस्सा बन जाने और स्वयं ही समस्याओं के जाल में फँसते जाने की अपेक्षा विवेकानन्द जैसे महापुरुषों का अनुगमन कर उत्कृष्टता की ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरित किया। इं. युगल किशोर, डॉ. योगेंद्र कुमार ने भी विद्यार्थियों को सम्बोधित किया।

कार्यशाला में विद्यार्थियों को पात्रता बढ़ाने के युगऋषि प्रणीत सूत्र समझाए गए। इस कार्यक्रम की सफलता में वनस्पति विभाग बॉटनिकल सोसाइटी के विभागाध्यक्ष डॉ. जी.के. चंद्रोल, पंकज कुमार जैन, प्रियंका साहू, मनमीत सिंह राजपूत, राकेश साहू का विशेष योगदान रहा।

विद्यार्थियों को व्यक्तित्व परिष्कार की प्रेरणाएँ देते 'दिया' छत्तीसगढ़ के विशेषज्ञ वक्ता

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

श्री रघुवीर सिंह शक्तावत, भीलवाड़ा। राज.

ग्राम ववराणा निवासी प्राणवान कार्यकर्त्ता श्री रघुवीर सिंह शक्तावत का दिनांक 1 सितम्बर 2022 को देहावसान हो गया। वे सन् 1985 से मिशन से जुड़े, लगभग 100 गाँवों में गायत्री और यज्ञ का प्रचार-प्रसार किया। कई गाँवों में हाथ से चलने वाले ज्ञानरथ के माध्यम से जन-जन तक युगसाहित्य पहुँचाया। वे शिक्षक थे, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के लिए उन्होंने विशेष सेवाएँ प्रदान कीं।

श्री दयाराम शर्मा, सतना। मध्य प्रदेश

रचनात्मक कार्यों के माध्यम से समाज को श्रेष्ठ बनाने में अविरत संलग्न रहने वाले प्राणवान कार्यकर्त्ता श्री दयाराम शर्मा का दिनांक 25 अगस्त 2022 को देहावसान हो गया। वे आजीवन नौकरी के साथ-साथ गायत्री परिवार की गतिविधियों में एकनिष्ठ भाव से अपना योगदान देते रहे। रीवा, नागौद एवं सतना गायत्री शक्तिपीठों में उन्होंने जीवनदानी कार्यकर्त्ता के रूप में सेवाएँ प्रदान कीं। नागौद गायत्री शक्तिपीठ के निर्माण में आपने विशेष भूमिका निभायी।

विवेकहीन उत्साह तूफान से घिरे उस जहाज की तरह है, जिसके डूबने की आशंका सदैव बनी रहती है।

'भारतीय संस्कृति' विषय पर संगोष्ठी

सम्पूर्ण विश्व का मार्गदर्शन कर रही है भारतीय संस्कृति

– प्रोफेसर प्रमोद भटनागर, शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

प्रो. प्रमोद भटनागर गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए

टोहाना, फतेहाबाद। हरियाणा

गायत्री परिवार की टोहाना शाखा द्वारा योग आश्रम टोहाना में 'भारतीय संस्कृति' विषय पर आध्यात्मिक गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसके माध्यम से नगर व ग्रामीण स्कूलों के मुख्याध्यापक, अध्यापक एवं गायत्री परिवार के अनेक श्रोताओं को भारतीय संस्कृति की गौरव-गाथा का बोध कराते हुए सांस्कृतिक चेतना के विस्तार में सहयोगी बनने की प्रेरणा दी गई।

संगोष्ठी के मुख्य वक्ता शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि प्रोफेसर प्रमोद भटनागर एवं सुखदेव शर्मा थे। प्रो. भटनागर जी ने कहा कि सीता-सावित्री, महाराणा प्रताप, लक्ष्मीबाई जैसे सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा के लिए सर्वोच्च आदर्श प्रस्तुत करने वाले महानुभावों के उदाहरण विश्व में केवल भारतीय संस्कृति में ही दिखाई देते हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति सारे विश्व का मार्गदर्शन करती रही है, आगे भी करेगी।

श्री सुखदेव शर्मा ने सांस्कृतिक समृद्धि के लिए युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी के विचारों को अपनाने तथा नियमित गायत्री उपासना करने की प्रेरणा दी।

टोहाना के श्री तानसिंह ने मंच संचालन करते हुए कहा कि नगरवासियों में सांस्कृतिक चेतना जगाने के लिए बड़े पैमाने पर ऐसी संगोष्ठियाँ होती रहनी चाहिए। युवा युग सृजेता श्री आशीष कौशिक ने गीत-संगीत के माध्यम से सद्गुरु की शरणागति की प्रेरणा दी।

विद्यालय में समस्त वाङ्मय एवं विपुल साहित्य की स्थापना

विद्यालय में साहित्य स्थापना करते प्रधानाचार्य एवं परिजन

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश

दिनांक 28 अगस्त को मदन मोहन मालवीय इण्टर कॉलेज करघना, प्रयागराज में पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा रचित वाङ्मय के समस्त 79 खण्ड, चारों वेद, उपनिषद के तीनों खण्ड, प्रज्ञा पुराण सेट, बाल निर्माण की कहानियाँ, 46 महापुरुषों की जीवनियाँ, गायत्री महाविज्ञान सहित लगभग 300 पुस्तकों की स्थापना की गई। यह स्थापना समस्त विद्यार्थियों की उपस्थिति में समारोहपूर्वक की गई।

गायत्री ज्ञानयज्ञ शाखा, प्रयागराज के सहयोग से इंजीनियर श्री एल.बी. सिंह, आर.डी.एस.ओ. लखनऊ द्वारा संकल्पित 11 विद्यालयों में साहित्य स्थापना के क्रम में यह 10वीं स्थापना है।

प्रधानाचार्य श्री मदन मोहन शंखधर ने दीप प्रज्वलन, साहित्य पूजन किया। श्रीयुत् श्रीनाथ श्रीवास्तव ने परम पूज्य गुरुदेव के महान व्यक्तित्व और उनके विचारों की विशेषता पर प्रकाश डाला। प्रधानाचार्य महोदय ने अपने विद्यालय को उत्कृष्ट विचारों से ज्ञान-समृद्ध बनाने के लिए गायत्री परिवार की ज्ञानयज्ञ शाखा प्रयागराज के प्रति आभार व्यक्त किया। इस कार्यक्रम में सर्वश्री विनोद कुमार ओझा, ओम प्रकाश तिवारी, रामदेव यादव, अवधेश सिंह, सरयू प्रसाद विश्वकर्मा, आर.के. सिंह (करछना) का विशेष योगदान रहा।

गणेशोत्सव में विचार क्रान्ति का विशिष्ट प्रयोग

पाण्डालों को सद्वाक्यों से सजाया

विलेपार्ले, मुंबई। महाराष्ट्र

युगऋषि का हर विचार एक प्रेरणा है, जो किसी भी व्यक्ति के जीवन को बदलने की क्षमता रखता है। मुम्बई में विलेपार्ले स्थित गायत्री परिवार का महिला मण्डल 'प्रोजेक्ट दृष्टिकोण' चलाकर युगऋषि के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का भरपूर प्रयास कर रहा है। अभिनव प्रयासों के अन्तर्गत महिला मण्डल ने कई गणेश पण्डालों में सद्वाक्यों के फ्लैक्स लगाए।

गायत्री परिवार के परिजन पाण्डालों में लगाए गए सनबोर्ड के साथ

उत्सव में आस्था के दर्शन करने वाले श्रद्धालुओं के लिए ये बहुत प्रेरणादायी सिद्ध हुए।

पर्यावरण गणेशोत्सव मनाया

बाल संस्कार शाला की प्रेरक प्रस्तुतियाँ

जैसलमेर। राजस्थान

दिया जैसलमेर द्वारा संचालित बाल संस्कार शाला के माध्यम से बच्चों में पर्व परंपरा और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता के लक्ष्य के साथ पाँच दिवसीय 'पर्यावरण गणेश उत्सव' मनाया गया। पहली बार मिट्टी की गणेश प्रतिमा स्थापित की गई। प्रतिदिन शाम को बच्चों द्वारा सामूहिक आरती की गई तथा गायन, नृत्य, खेलकूद, चित्रकला प्रतियोगिता आदि रोचक गतिविधियों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशील होने का संदेश दिया गया।

समापन समारोह में 51 दीपकों के साथ महा आरती की गई और सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गईं। तुलसी के गमले में मिट्टी की गणेश प्रतिमा का भावपूर्ण विसर्जन करते हुए पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया और प्रसाद के रूप में तुलसी के पौधे दिए गए। सुश्री मनीषा छंगाणी ने बताया कि विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नगर के गणमान्यों द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।

श्रावण में 24 लाख महामंत्र जप अनुष्ठान

घाटोल, बाँसवाड़ा। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ घाटोल पर पवित्र श्रावण मास में 24 लाख गायत्री महामंत्र का जप अनुष्ठान सम्पन्न हुआ। 29 जुलाई से 27 अगस्त 2022 तक की तिथियों में 30 साधकों ने प्रतिदिन प्रातः-सायं दो-दो घण्टे जप कर यह सामूहिक अनुष्ठान सम्पन्न किया। सुश्री रेखा पंचाल एवं विमला उपाध्याय ने युग साधना में अपनी विशिष्ट आस्था का परिचय देते हुए अंतिम 5 दिनों तक मौन एवं निराहार रहते हुए सामूहिक साधना में भागीदारी की।

विशिष्ट कार्यक्रमों में दिनांक 25 अगस्त को सभी मातृशक्तियों द्वारा पार्थिव पूजन कर शिव अभिषेक किया गया। 26 अगस्त को गायत्री शक्तिपीठ पर विशाल दीप यज्ञ का आयोजन किया गया। इस महानुष्ठान की समाप्ति श्रावण मास के अंतिम दिन पंच कुंडीय यज्ञ के साथ हुई। इस अवसर पर पुंसवन, नामकरण एवं जन्म दिवस संस्कार भी संपन्न कराए गए। यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर स्थानीय उपखंड अधिकारी विजय पण्ड्या, उपजोन प्रभारी श्री भूपेन्द्र पण्ड्या एवं गायत्री परिवार के अन्य गणमान्य सर्वश्री सुरेश जोशी, दिनेश भट्ट, आशा द्विवेदी सहित आसपास के गाँव नरवाली, खमेरा, हरो, बड़ी पडाल, दारमा, आमली ओटा, कर गचीया आदि के श्रद्धालु बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

श्राद्ध-तर्पण, देव संस्कृति विस्तार संगोष्ठी

मातृकुण्डिया, भीलवाड़ा। राजस्थान

गायत्री परिवार व भारत विकास परिषद कपासन के संयुक्त तत्वावधान में मातृकुण्डिया के गंगा घाट पर सामूहिक श्राद्ध-तर्पण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर शहीदों एवं महापुरुषों के नाम का तर्पण भी किया गया। पंच कुण्डीय यज्ञ में विश्वशांति एवं जनकल्याण की प्रार्थना के साथ लम्पी बीमारी से गौ-माताओं को बचाने के लिए विशेष आहुतियाँ दी गईं।

भारत विकास परिषद के अध्यक्ष श्री देवेंद्र सोमानी के मुख्य आतिथ्य एवं गायत्री परिवार के श्री रमेश पुरोहित की अध्यक्षता में कपासन तहसील से पधारे श्रद्धालुओं की गोष्ठी हुई, जिसमें वैश्विक अशान्ति, भ्रष्टाचार, अनाचार से मानवता को बचाने के लिए देव परिवार विस्तार एवं भारतीय संस्कृति को घर-घर पहुँचाने की प्रेरणा दी गई।

शिक्षक दिवस पर युगनिर्माता गुरुजनों का सम्मान

जबलपुर। मध्य प्रदेश

''युग निर्माण कैसे होगा? व्यक्ति के निर्माण से।'' शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में गायत्री शक्तिपीठ मनमोहन नगर, जबलपुर में पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी के इस दृष्टिकोण को चरितार्थ करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले गुरुजनों का हार्दिक स्वागत-सम्मान किया गया। इस क्रम में गणमान्य अतिथियों ने जिले के विभिन्न विद्यालयों से आए 100 से अधिक शिक्षकों को तिलक लगाकर एवं आचार्य जी द्वारा रचित प्रेरक साहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया।

शिक्षक सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. रामकुमार स्वर्णकार-संयुक्त संचालक, लोक शिक्षण, जबलपुर संभाग तथा विशेष अतिथि भू.पू. सहायक आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन जबलपुर के श्री जी.पी.चौहान, श्री एस.आर. सोलंकी, पी.सी.एम. के भू.पू. प्राचार्य डॉ पी.एल. मिश्रा, केन्द्रीय विद्यालय खमरिया से उप प्राचार्य श्री राजेन्द्र कुमार विश्वकर्मा उपस्थित रहे।

गायत्री शक्तिपीठ से उपजोन प्रभारी डॉ. एम.पी. गुप्ता की अध्यक्षता में, डॉ. प्रमोद श्रीवास्तव, श्री प्रमोद राय, श्री बी.बी. शर्मा, श्री प्रकाश मूरझानी, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के संयोजक श्री रमेश तिवारी, सचिव चौधरी हरिशंकर का विशेष मार्गदर्शन रहा। श्री मोहन चक्रवैश्य, श्रीपाल चौहान का विशेष सहयोग रहा। मंच संचालन डॉ डी.डी. चौकसे एवं आभार श्री प्रकाश सेन ने व्यक्त किया।

234 शिक्षकों के पग पखारे

सभा में उपस्थित गुरुजन और उनके पग पखारते गायत्री परिवार के परिजन

वडोदरा। गुजरात

अखिल विश्व गायत्री परिवार वडोदरा ने 5 सितम्बर को 'शिक्षक सम्मान समारोह' का आयोजन कर 234 शिक्षकों का सम्मान किया। सम्मान प्रदान किए जाने वाले शिक्षकों के चरणों का प्रक्षालन गुलाब जल से कर, उन्हें चंदन का तिलक लगाकर, गायत्री मंत्र दुपट्टा पहनाकर सम्मानित किया गया। वरिष्ठ परिजनों के द्वारा उनको मोमेंटो एवं सफल जीवन की दिशाधारा पुस्तक भी दी गई। इस अवसर पर गायत्री परिवार के प्रवक्ताओं ने राष्ट्र के नवनिर्माण एवं युवाओं के समक्ष खड़ी चुनौतियों के समाधान के विषय में परम पूज्य गुरुदेव की विचारधारा से सभा को अवगत कराया। समारोह में जिला शिक्षाधिकारी श्री नवनीत मेहता सहित अनेक गणमान्य उपस्थित थे।

50 प्रतिभावान युवा शिक्षकों का सम्मान

विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा प्रदान करें जो विद्यार्थियों के जीवन में संस्कारों की सुवास भर सके

डबरा, ग्वालियर। मध्य प्रदेश

सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन जी के 134वें जन्मदिवस पर लायंस क्लब डबरा एवं अखिल विश्व गायत्री परिवार डबरा के संयुक्त तत्त्वावधान में शिक्षक सम्मान समारोह आयोजित हुआ। इसमें श्री रविझा एवं पंकज गुप्ता सहित नगर के 50 प्रतिभावान युवा शिक्षकों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में डॉ. संजय गुप्ता प्राध्यापक एम.एल.बी. कॉलेज ग्वालियर एवं गायत्री परिवार के श्री रामजी शरण छिरोल्या की विशेष उपस्थिति रही।

डॉ. संजय गुप्ता ने युवाओं में पनपती विसंगतियों के प्रति ध्यानाकर्षित करते हुए विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में संस्कारों की सुवास भरने का आह्वान किया। लॉयन्स क्लब की ओर से अतिथियों के सम्मान में सहभोज दिया गया।

साक्षरता दिवस युगऋषि का संदेश

उज्जैन। मध्य प्रदेश

अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस 8 सितंबर जिला प्रशासन उज्जैन व रोटरी क्लब की साक्षरता महा रैली में गायत्री परिवार उज्जैन की प्रभावी उपस्थिति रही। इसमें नगर के सभी प्रमुख समाजसेवी संगठनों ने भाग लेकर साक्षरता के प्रति जागरूकता बढ़ाने में योगदान दिया। गायत्री परिवार के स्लोगनों ने सभी को बहुत प्रभावित किया।

जो कूड़े को खाद बना सके, उसे सच्चा कलाकार समझो।

पूर्वोत्तर भारत में आध्यात्मिक-सांस्कृतिक चेतना के उन्नयन में भागीदारी का आह्वान

अरुणाचल प्रदेश के लेखी गाँव, नाहरलगुन में परम्परागत ढंग से स्वागत

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का असम, अरुणाचल एवं मेघालय प्रवास

राज्यपाल, मुख्यमंत्री सहित कई गणमान्यों और विश्वविद्यालयों से मुलाकात हुई

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी दिनांक 27 से 30 अगस्त 2022 की तिथियों में असम, अरुणाचल और मेघालय के प्रवास पर पहुँचे। उनके प्रवास से पूर्वोत्तर भारत में गायत्री परिवार की गतिविधियों के साथ परम पूज्य गुरुदेव की विचारधारा का विस्तार कर रहे परिजनों में अभूतपूर्व उत्साह दिखाई दिया। कोरोना काल के बाद वरिष्ठ शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि के इस क्षेत्र में पहले प्रवास से पूरे क्षेत्र में सक्रियता की नई लहर दौड़ गई।

केन्द्रीय वरिष्ठ प्रतिनिधि का असम और अरुणाचल प्रदेश में आगमन वहाँ सक्रिय अनेक शाखाओं के लिए पथ प्रदर्शक था। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी की अनेक शीर्षस्थ गणमान्यों से मुलाकात भी हुई, जिससे क्षेत्रीय कार्यकर्त्ताओं को पूरे पूर्वोत्तर भारत में देव संस्कृति के विस्तार में बहुत सहायता मिलेगी।

अरुणाचल के राज्यपाल (डॉ.) ब्रिगेडियर बी.डी. मिश्रा, से.नि. से वार्ता

असम के मुख्यमंत्री मान. हिमंता बिस्वा सरमा व श्री नड्डा जी से चर्चा

अरुणाचल के स्वास्थ्य मंत्री के घर

तीनों प्रदेशों के परिजनों को युगधर्म का बोध कराते विशाल सम्मेलन-संगोष्ठियाँ, देवस्थापनाएँ

हवाई अड्डे पर भव्य स्वागत

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 27 अगस्त को डिब्रूगढ़ पहुँचे। हवाई अड्डे पर श्री जे.के. द्विवेदी, मुख्य अभियंता पाशीघाट और पूर्वोत्तर जोन प्रभारी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री विनय केसरी सहित दुलियाजान, जागुन एवं तिनसुकिया के 30 परिजनों ने उनका भव्य स्वागत किया। अपनी अनन्य आत्मीयता और विनम्रता के लिए लोकप्रिय डॉ. चिन्मय जी ने उनके श्रद्धा-सुमनों को हृदय से स्वीकारते हुए अगले कार्यक्रम के लिए प्रस्थान किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी के स्वागत का औपचारिक समारोह मनढ़ानिया भवन, तिनसुकिया में रखा गया था। वहाँ आयोजित कार्यक्रम में असम की डिब्रूगढ़, तिनसुकिया, जागुन, दुलियाजान, शिवसागर, दुमदुमा तथा अरुणाचल के सनपुरा, गुनानगर, नामसाई, तेजू के समन्वयक एवं वरिष्ठ परिजनों ने असमिया संस्कृति के अनुसार फुलाम गमछा, झापी, सराय व पुष्पाहार के साथ भव्य स्वागत किया। स्वागतोपरांत एक विशाल सभा हुई, लगभग 600 परिजन इस सभा में उपस्थित थे।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने तमाम प्रतिकूलताओं के बीच परम पूज्य गुरुदेव के उद्घोष 'इक्कीसवीं सदी-उज्ज्वल भविष्य' के चरितार्थ होने की सुनिश्चितता का विश्वास दिलाया। साथ ही परम वन्दनीया माताजी के जन्म शताब्दी वर्ष-2026, शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष एवं नारी सशक्तीकरण वर्ष की विशेषताओं और योजनाओं पर प्रकाश डाला। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने कहा कि हर घर तक युग चेतना का विस्तार, घर-घर गायत्री उपासना, यज्ञ और संस्कार समय की माँग है। हम सबको इस पुनीत अभियान में जुटकर अपना युगधर्म निभाना होगा।

यह कार्यक्रम बुद्धिजीवियों द्वारा बहुत सराहा गया। केन्द्रीय प्रतिनिधि ने वर्तमान समाज के दूषित वातावरण में परस्पर प्रेम, विश्वास, सद्भाव बढ़ाने वाले परम पूजय गुरुदेव के सर्वमान्य सूत्रों की व्याख्या की। बुद्धिजीवियों को इन विचारों में उज्ज्वल भविष्य के स्वर्णिम प्रभात की झलक दिखाई दी। प्रिण्ट मीडिया और टी.वी. चैनलों ने भी आदरणीय डॉ. चिन्मय जी के विचारों को प्रमुखता से प्रकाशित किया।

तिनसुकिया में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों ने कुशल व्यवसायी श्री विकास अग्रवाल एवं पूर्व विधायक श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह सहित कई गणमान्यों के यहाँ देवस्थापनाएँ कीं।

डिब्रूगढ़ में देवस्थापना के साथ गायत्री परिवार की नई शाखा का शुभारम्भ किया गया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी तिनसुकिया में आयोजित सभा को सम्बोधित करते हुए

गायत्री शक्तिपीठ, नाहर लागुन में शिलान्यास-पूजन करते आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी एवं सभा में उपस्थित नैष्ठिक परिजन

शक्तिपीठ के लिए शिलान्यास

28 अगस्त को आदरणीय शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि राजधानी ईटानगर के समीप गायत्री शक्तिपीठ लेखीगाँव, नाहरलागुन (पापुमपारे) के शिलान्यास हेतु पहुँचे। वहाँ आयोजित जनसभा में जीरो, याजुली, नेपको, ईटानगर तथा नाहरलागुन शाखाओं के सैकड़ों परिजन उपस्थित थे।

सभा के आरम्भ में अरुणाचल प्रदेश की सांस्कृतिक परम्पराओं के अनुरूप केन्द्रीय प्रतिनिधियों का शंखध्वनि, पुष्पवर्षा के साथ भव्य स्वागत हुआ। मंच पर भी स्थानीय ट्रस्टियों एवं गणमान्यों ने जैकेट, गमछा और गुलदस्ता भेंट कर अपने हृदय की भावनाएँ व्यक्त कीं।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने अरुणाचल प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का उल्लेख करते हुए परिजनों से आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना के उन्नयन में भागीदारी करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि आज पूरे विश्व में असुरता का साम्राज्य छाया है। इस असुरता को परास्त करने के लिए हमें संगठित होकर आद्यशक्ति गायत्री को युगशक्ति के रूप में परिणत करना होगा।

इस कार्यक्रम में श्रीमान जिमी चिराम, आई.पी.एस. एस.पी. कैपिटल ईटानगर विशेष रूप से उपस्थित रहे। उन्होंने मिशन की विचारधारा को बहुत पसंद किया। उन्होंने बड़े भक्तिभाव के साथ देवस्थापना कराई।

गुवाहाटी में आत्मीयता विस्तार

29 अगस्त को आदरणीय चिन्मय जी गुवाहाटी प्रवास पर पहुँचे। प्रातः 4.30 बजे परिजनों ने रेलवे स्टेशन पर शानदार स्वागत किया। मुख्य कार्यक्रम गायत्री चेतना केन्द्र पर था। वहाँ गुवाहाटी, ढेकियाजुली, नारंगी, कुमारीकाटा, अत्रिघाट, ठाकुरियापाड़ा, मनकाचर आदि शाखाओं के सैकड़ों लोग केन्द्रीय प्रतिनिधि से आत्मीयता और मागदर्शन पाने के लिए उत्साहित थे।

इससे पूर्व आदरणीय डॉ. चिन्मय जी के चेतना केन्द्र पहुँचने पर पारंपरिक बिहू नृत्य के साथ स्वागत हुआ। 9 शाखाओं के समन्वयक, श्रद्धालुओं ने मंच पर पारंपरिक संस्कृति के अनुरूप स्वागत किया। इस अवसर पर केन्द्रीय प्रतिनिधि ने शाखा स्तर पर सामूहिक देवस्थापनाएँ कराईं।

विख्यात देवालयों के दर्शन

कामाख्या माता के दर्शन

गुवाहाटी का प्रवास माँ कामाख्या माता मंदिर के दर्शन के साथ आरम्भ हुआ। वहाँ श्री लड्डू माधव मिश्रा (स्टेट बैंक) ने मंदिर समिति के वरिष्ठ प्रतिनिधियों के साथ अतिथि गृह में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का स्वागत किया।

गुवाहाटी में कई गणमान्यों के यहाँ देवस्थापनाएँ हुईं। श्री हितेश डेका-पूर्व कुलपति श्रीमंत शंकर देव विवि., श्री राजेश तायल, डॉ. देवेन चन्द्र दास, श्री रामशिरोमणि तिवारी, श्री अरूप भगवती, श्रीमती सुनीता उपाध्याय, श्री रामप्रीत सिंह प्रमुख रूप से शामिल रहे।

शिलौंग, मेघालय में

30 अगस्त को आदरणीय डॉ. चिन्मय जी शिलौंग के लिए रवाना हुए। उन्होंने मार्ग में नौंगपोह के मंदिर में और शिलौंग के उमियम मंदिर के दर्शन किए। उमियम मंदिर में परिजनों ने हार्दिक स्वागत किया। कई गणमान्यों के यहाँ देवस्थापनाएँ की गईं।

पूरे प्रवास में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि पूर्वी जोन प्रभारी श्री विनय केसरी एवं देसंविवि के आचार्य श्री रामावतार पाटीदार, श्री ज्वलंत भावसार एवं झारखण्ड के प्राणवान कार्यकर्त्ता श्री संतोष महतो साथ रहे।

बायें-गुवाहाटी के आत्मीयता विस्तार कार्यक्रम में और दायें-शिलौंग के उमियम मंदिर में देवस्थापनाओं के उत्साहवर्धक पल

विशिष्ट गणमान्यों से वार्ता

अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल ब्रिगेडियर (डॉ.) श्री बी.डी. मिश्रा

नाहरलागुन के प्रवास में अरुणाचल प्रदेश के कई गणमान्यों से भेंट हुई। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी राज्यपाल ब्रिगेडियर (डॉ.) बी.डी. मिश्रा, सेवानिवृत्त से भेंट वार्तालाप हेतु राजभवन पहुँचे। उन्हें पूर्वोत्तर के राज्यों में मिशन की सक्रियता एवं देव संस्कृति के विस्तार की संभावनाओं से अवगत कराया। डॉ. चिन्मय जी ने गायत्री माता की भव्य प्रतिमा उन्हें उपहार स्वरूप प्रदान की।

स्वास्थ्य मंत्री श्री एलो लिबांग

अरुणाचल प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री श्री एलो लिबांग से उनके घर पर भेंट हुई। वे अरुणाचल के मूल निवासी हैं। उन्होंने सपत्नीक अपनी सनातन वनवासी परम्पराओं के अनुरूप भव्य स्वागत किया। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने उन्हें देव संस्कृति विवि. में आयुर्वेद, योग, यज्ञ एवं अन्य वैकल्पिक चिकित्साओं पर हो रहे कार्यों से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि अरुणाचल अपनी समृद्ध प्राकृतिक विरासत के आधार पर प्राकृतिक जीवन शैली को लोकप्रिय बनाने में बड़ी भूमिका निभा सकता है।

असम के मुख्यमंत्री एवं भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के संग

असम के मुख्यमंत्री माननीय श्री हिमंता बिस्वा सरमा एवं भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री जे.पी. नड्डा जी से भारतीय जनता पार्टी के कार्यालय में वार्ता हुई। दोनों महानुभावों के साथ पूर्वोत्तर भारत में देव संस्कृति के विस्तार की संभावनाओं पर सारगर्भित वार्ता हुई। शान्तिकुञ्ज की ओर से देवस्थापना चित्र एवं देसंविवि के प्रतीक भेंट कर उन्हें सम्मानित किया गया।

विद्वत्ता युवकों को संयमी बना देती है। यह बुढ़ापे का आराम है। निर्धनता में धन है विद्या और धनवानों के लिए यह आभूषण है।

मुंबई अश्वमेध महायज्ञ संकल्प समारोह

अश्वमेध महायज्ञ तिथियाँ : 23 से 28 जनवरी 2024

> मुम्बई में किया जा रहा युग परिवर्तन का यह महान अनुष्ठान देश ही नहीं, सारी दुनिया को प्रभावित करेगा।
>
> - श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए, मंच पर विधायक श्री कोटेचा, डॉ. चिन्मय जी एवं श्री मनुभाई पटेल

ठाणे। महाराष्ट्र

11 सितंबर 2022 को ठाणे के गडकरी रंगायतन नाट्यगृह में मुंबई अश्वमेध महयज्ञ का संकल्प समारोह सम्पन्न हुआ। इसका शुभारंभ मुख्य वक्ता आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, श्री मिहिर कोटेचा, विधायक भाजपा मुंबई एवं श्री मनुभाई पटेल के द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। इस कार्यक्रम में मुंबई, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश के गायत्री परिवार के 2500 सक्रिय परिजन शामिल थे।

मुम्बई में आश्वमेधिक अनुष्ठान के लिए उत्साहित स्वजनों के प्रति अपनी विशेष आत्मीयता रखते हुए श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने अपना वीडियो संदेश भेजा था। इस संदेश ने सभी परिजनों में नवीन चेतना का संचार किया। परिणाम स्वरूप परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के प्रति समर्पित स्वजनों ने आगे बढ़कर अश्वमेध महायज्ञ में जिम्मेदारियाँ निभाने के संकल्प लिए।

अपने संदेश में श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी ने मुंबई को माया नगरी से आध्यात्मिक नगरी बनाने का आह्वान किया। उन्होंने पूरे देश और विदेश के श्रद्धालुओं से मुंबई अश्वमेध में भागीदारी कर विचार क्रान्ति का शंखनाद करने का संदेश दिया, कहा कि कालबादेवी, मुम्बई मेरी जन्मस्थली होने के कारण इससे मेरी विशेष आत्मीयता है। मुम्बई में किया जा रहा युग परिवर्तन का यह महान अनुष्ठान देश ही नहीं, सारी दुनिया को प्रभावित करेगा।

आदरणीय डॉ. चिन्मय भैया ने आए हुए सभी कार्यकर्त्ताओं को यज्ञ की महिमा बताते हुए कहा कि गायत्री परिवार ही एक ऐसा आध्यात्मिक संगठन है, जिसने परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के संरक्षण में राष्ट्र को समुन्नत और संगठित बनाने के लिए 1500 वर्ष के लम्बे अन्तराल के बाद अश्वमेध महायज्ञ की शृंखला पुनः आरम्भ की है। इसके माध्यम से युगशक्ति गायत्री की दिव्य चेतना को जन-जन तक पहुँचाकर एक दिव्य वातावरण बनाया जा सकेगा।

अंत में श्री मनुभाई पटेल ने मुंबई गायत्री परिवार की ओर से शान्तिकुञ्ज को आश्वासन दिया कि मुम्बई के सभी कार्यकर्त्ता अपने तन, मन, धन और विचारों की आहुतियाँ इस महान कार्य के लिए समर्पित करने के लिए संकल्पित हैं।

उद्देश्य और सफलता के सूत्र

आद. डॉ. चिन्मय जी ने मुंबई अश्वमेध महायज्ञ उद्देश्यों की सिद्धि के लिए चार सूत्र दिए -

परिवर्तन : हमें लोगों की जीवन शैली को यज्ञमय बनाने की प्रेरणा देनी है।

यजन : लोगों में संवेदना जगाएँ, ताकि वे यज्ञ में केवल आहुति ही न दें, अपनी भावनाएँ भी अर्पित करें।

भागीदारी : केवल मुंबई और महाराष्ट्र ही नहीं, देश और दुनिया के 1 करोड़ लोगों की न्यूनतम 51 रुपए और एक मुट्ठी चावल की भागीदारी हो। यज्ञ में भागीदार होने वाले प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम 9 दिवसीय गायत्री मंत्र जप अनुष्ठान की प्रेरणा दें।

अनुष्ठान : इसे साधकों, संकल्पवानों, साहसियों और संवेदनशीलों के सामूहिक पुरुषार्थ का विराट अनुष्ठान बनाएँ।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का पूर्वोत्तर भारत प्रवास

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रतिकुलपति देव संस्कृति विश्वविद्यालय के संग श्री साकेत कुशवाहा, कुलपति राजीव गाँधी विश्वविद्यालय एवं अन्य अधिकारी

दो विश्वविद्यालयों के गणमान्यों से चर्चा

(पृष्ठ 6 के शेष समाचार)

कुलपति, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय

नाहरलागुन में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति जी की राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री साकेत कुशवाहा से उनके आवास पर मुलाकात हुई। इस अवसर पर विवि. के 20-25 वरिष्ठ अधिकारियों और प्राध्यापकों से वार्ता हुई। शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान समय की आवश्यकताओं और संभावनाओं पर विचार विनिमय बहुत उपयोगी रहा। विद्यार्थियों के जीवन में आस्तिकता संवर्धन हेतु किए जा रहे शान्तिकुञ्ज के प्रयासों से अवगत कराया। माननीय कुलपति जी के आवास पर देवस्थापना भी की गई।

रॉयल ग्लोबल यूनिवर्सिटी गुवाहाटी में

रॉयल ग्लोबल विश्वविद्यालय गुवाहाटी में कुलाधिपति श्री अशोक पंसारी जी, कुलपति श्री संजय प्रताप सिंह एवं अन्य गणमान्यों से भेंटवार्ता का कार्यक्रम था। दोनों विश्वविद्यालयों के बीच शिक्षा एवं संस्कृति के बेहतर समन्वय एवं सहयोग पर विस्तार से चर्चा हुई। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने उपस्थित गणमान्यों के यहाँ देवस्थापनाएँ भी कीं।

विशिष्ट महानुभावों से हुई मुलाकात

बायें चित्र में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी असम के सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं परम पूज्य गुरुदेव के प्रति अनन्य भाव से समर्पित साधक, अखण्ड ज्योति असमिया पत्रिका एवं युग साहित्य के अनुवादक डॉ. देवेन चंद्र दास से मिलने पहुँचे। उन्होंने डॉ. दास के योगदान की सराहना की, साथ ही जन्मशताब्दी वर्ष-2026 में साहित्य की तैयारियों को लेकर चर्चा भी की। युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज की सूक्ष्म चेतना के दिव्य आशीष स्वरूप उनके घर देवस्थापना कराई।

दायें के चित्र में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी रॉयल ग्लोबल विश्वविद्यालय, गुवाहाटी के निदेशक श्री अशोक पंसारी के यहाँ देवस्थापना कराते हुए।

राजस्थान में जन्मशताब्दी वर्ष-2026 की प्रयाज योजनाएँ चल पड़ा गाँव-गाँव यज्ञ, देवस्थापना अभियान

अलवर। राजस्थान

जिले में परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी एवं अखण्ड ज्योति प्राकट्य के शताब्दी वर्ष-2026 की प्रयाज योजना के अन्तर्गत गृहे-गृहे एवं ग्रामे-ग्रामे गायत्री उपासना-यज्ञ अभियान आरंभ कर दिया है। इसका शुभारम्भ 27 अगस्त को मालाखेड़ा तहसील के ग्राम ढाकपुरी से हुई। उस दिन सायं दीपयज्ञ एवं अगले दिन पाँच कुंडीय यज्ञ के माध्यम से गाँववासियों को युग संदेश दिया गया।

कार्यक्रम का संचालन गायत्री शक्तिपीठ अलवर के श्री मुरारीलाल शर्मा, श्री ज्ञानेंद्र शर्मा, श्री चरण सिंह चौधरी जिला संयोजक, श्रीमती मंजू चौधरी, श्री रघुवीर सिंह नरुका एवं श्री श्याम लाल साहू की टोली ने किया। उन्होंने लोगों को आत्मपरिष्कार एवं जीवन के उत्कर्ष हेतु गायत्री उपासना, साधना एवं संस्कारों का महत्त्व समझाया। टोली ने सामाजिक विसंगतियों को दूर करने के लिए समूह चेतना जगाने में सहयोगी बनने की प्रेरणा भी दी।

यज्ञ अभियान के क्रम में इसी तरह का अगला कार्यक्रम नेहरू नगर एन ई बी अलवर के शिवमंदिर में 3 सितम्बर को सम्पन्न हुआ।

इससे पूर्व दिनांक 23, 24 अगस्त 2022 को गृहे-गृहे गायत्री उपासना-यज्ञ अभियान को हर घर, हर गाँव तक पहुँचाने के लिए कार्यकर्त्ताओं की जिला स्तरीय गोष्ठी हुई, कार्ययोजना पर मंथन हुआ और योजना के क्रियान्वयन के लिए टोलियों का गठन किया गया। इस गोष्ठी का संचालन श्री जयप्रकाश चौधरी ने किया।

गायत्री शक्तिपीठ आसपुर पर हो रही जिला स्तरीय कार्यकर्त्ता गोष्ठी

आसपुर, डुंगरपुर। राजस्थान

11 सितम्बर को गायत्री शक्तिपीठ आसपुर पर केन्द्रीय प्रतिनिधि श्री रामेश्वर सुखवाल के सान्निध्य में सागवाड़ा जिले के 125 वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं की बैठक हुई। जन्मशताबदी वर्ष-2026 के प्रयाज के संदर्भ में आयोजित इस बैठक में जिले के गाँव-गाँव, घर-घर तक गायत्री उपासना एवं यज्ञ अभियान को पहुँचाने के लिए टोलियों का गठन हुआ। श्री शिवराम कलाल के अनुसार आगामी वर्ष के आरम्भ में आसपुर एवं सागवाड़ा में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सहित जिले में 10 बड़े यज्ञीय आयोजन करने के संकल्प उभरे।

चितौड़गढ़। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ चित्तौड़गढ़ पर भी जन्मशताब्दी वर्ष-2026 के संदर्भ में जिला स्तरीय गोष्ठी हुई। जिले के हर गाँव तक परम पूज्य गुरुदेव के क्रान्तिकारी विचारों के संग गायत्री माता एवं यज्ञ भगवान को पहुँचाने के लिए कार्ययोजना बनाई गई। जिले की सभी तहसीलों के लिए टोलियों का गठन किया गया और उन्हें संकल्पबद्ध होकर अभियान को गति देने का उत्तरदायित्व सौंपा गया। यह गोष्ठी शान्तिकुञ्ज से पधारे श्री रामेश्वर सुखवाल एवं श्री सत्यनारायण शृंगी की उपस्थिति में हुई। कार्यक्रम का संचालन श्री जगदीश जोशी ने किया।

प्रज्ञा संस्थानों के लिए ज्ञातव्य

सभी शक्तिपीठ एवं प्रज्ञापीठों के व्यवस्थापकों/मुख्य प्रबंध ट्रस्टियों को सूचित किया जाता है कि वे अपने यहाँ से सम्बंधित वर्तमान जानकारियाँ शक्तिपीठ प्रकोष्ठ, शान्तिकुञ्ज को ई-मेल shaktipeeth@awgp.org पर अथवा डाक से अविलम्ब प्रेषित कर दें। इस संदर्भ में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए मोबाइल 9258360694 , 8439014125 पर संपर्क किया जा सकता है। **जो मुख्य जानकारियाँ भेजी जानी हैं, वह हैं-**

- शक्तिपीठ/प्रज्ञापीठ का वर्तमान संपर्क सूत्र/ ईमेल
- वे पीठें जो निमार्णाधीन हैं/ जिनमें अभी तक गायत्री माता की प्राण प्रतिष्ठा नहीं हुई है, वे अपने यहाँ के अद्यतन प्रगति के समाचार भेजें।
- वे पीठें, जहाँ प्राण-प्रतिष्ठा शीघ्र संपन्न होने वाली है, वे उपरोक्त मोबाइल पर संपर्क करे।
- वित्तीय वर्ष 2021-2022 के आय-व्यय की ऑडिट रिपोर्ट न भेजी हो, तो शीघ्र भेजें ।
- पैन कार्ड/12 एबी/80 जी के पंजीयन की जानकारी पंजीयन क्रमांक सहित जानकारी भेजें।
- प्रज्ञा संस्थान के माध्यम से किये जा रहे कार्यों की त्रैमासिक प्रगति रिपोर्ट भेजें ।

निवेदक : शक्तिपीठ प्रकोष्ठ, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार। उत्तराखण्ड, पिन-249411

वाल्मीकि समाज को नशामुक्ति की प्रेरणा दी

कुम्हेर, भरतपुर। राजस्थान

वाल्मीकि समाज कुम्हेर द्वारा निर्मित शिवालय के स्थापना दिवस-6 सितम्बर के दिन दीपयज्ञ का आयोजन किया गया। पूरे संभाग में सामाजिक सुधारों के लिए विख्यात श्री श्याम सुन्दर शर्मा ने वाल्मीकि समाज के उत्थान की बहुमूल्य प्रेरणाएँ प्रदान कीं। उन्होंने नशामुक्ति पर विशेष बल दिया, क्योंकि इस समाज के अधिकांश पुरुष शराब के आदी हैं। उन्होंने कहा कि वाल्मीकि समाज के लोग चाहें तो इस बुरी लत की बेड़ियों को अपनी संकल्प शक्ति के सहारे काट सकते हैं। इसके लिए सबके सामूहिक प्रयासों की और शराब के विरुद्ध वातावरण बनाने की जरूरत है।

भारत के नवनिर्माण के संकल्प के साथ अपना व्यक्तित्व गढ़ें। – माननीय धामी जी, मुख्यमंत्री

देव संस्कृति विश्वविद्यालय का 40वाँ ज्ञानदीक्षा समारोह सम्पन्न

दक्षिण कोरिया, यू.के., बेल्जियम, जापान के नवप्रवेशी विद्यार्थियों में दिखा विशेष उत्साह

510 विद्यार्थियों ने ज्ञानदीक्षा के साथ समाजसेवा की ओर बढ़ाए कदम

40 से अधिक पाठ्यक्रमों में हुआ है चयन

समारोह में भाग ले रहे आचार्य-विद्यार्थी एवं मंचासीन गणमान्य माननीय श्री पुष्कर सिंह धामी, डॉ. चिन्मय जी, श्री शरद पारधी जी एवं श्री बलदाऊ देवांगन जी

परम पूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी जैसी विलक्षण विभूतियाँ संसार में बहुत कम देखने को मिलती हैं। आपको एक ऐसे ऋषि द्वारा अवतरित ज्ञान की गंगोत्री में जीवन को गढ़ने का सौभाग्य मिल रहा है, जिसने करोड़ों लोगों के जीवन को बदला है। ज्ञान की इस धारा को निरन्तर प्रवाहित रखने के संकल्प के साथ आपको अपने व्यक्तित्व का निर्माण करना चाहिए।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, कुलाधिपति, देव संस्कृति विवि. ने कराया ज्ञानदीक्षा संकल्प, कहा-

''देव संस्कृति विश्वविद्यालय का दिव्य वातावरण और परम पूज्य गुरुदेव की सूक्ष्म चेतना का प्रभाव विद्यार्थियों को महानता की ओर अग्रसर करने में समर्थ है।''

उत्तराखण्ड राज्य के मुख्यमंत्री माननीय श्री पुष्कर सिंह धामी जी ने 3 सितम्बर 2022 को देव संस्कृति विश्वविद्यालय के ज्ञानदीक्षा समारोह को सम्बोधित करते हुए नवप्रवेशी विद्यार्थियों को उपरोक्त प्रेरणाएँ प्रदान कीं। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि आप विशिष्ट कार्य के लिए बने हैं। आजादी के अमृत काल में भारत के नवनिर्माण की जिम्मेदारी आप सब की है। समाज को आपसे बड़ी आशाएँ हैं। आज ज्ञानदीक्षा पर्व के साथ आपके भीतर की दिव्य शक्तियों को जगाने का कार्य आरम्भ हो रहा है।

समारोह का शुभारम्भ मुख्य अतिथि माननीय मुख्यमंत्री जी के संग कुलपति श्री शरद पारधी जी एवं प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। श्री शरद पारधी जी ने एक पौधा भेंटकर मुख्यमंत्री जी का स्वागत किया।

यह ज्ञानदीक्षा पर्व मानवीय चेतना को दैवी संकल्प के साथ जोड़ने का पर्व है।
– डॉ. चिन्मय जी, प्रतिकुलपति, देसंविवि.

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति माननीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ऑनलाइन इस कार्यक्रम से जुड़े। उन्होंने अपने ऑडियो संदेश के माध्यम से विद्यार्थियों और आचार्यों को अध्ययन-अध्यापन काल में विद्यार्थियों का व्यक्तित्व गढ़ने के लिए आवश्यक अनुशासन के पालन की एवं वर्जनाओं से बचने की शपथ दिलाई। उन्होंने कहा कि जब विवेकानन्द जैसे जिज्ञासु एवं जागरूक शिष्य और स्वामी रामकृष्ण परमहंस जैसे समर्थ सद्गुरु का संयोग होता है, तब उसके चमत्कारिक परिणाम उभरते हैं।

इससे पूर्व कुलपति आदरणीय श्री शरद पारधी जी ने अपने स्वागत उद्बोधन में कहा कि ज्ञानदीक्षा के माध्यम से जो विचार और संकल्प आपके मन में आरोपित किए जा रहे हैं, उनका लाभ आपको पूरे अध्ययन काल में मिलता रहेगा।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि आज का यह ज्ञानदीक्षा पर्व मानवीय चेतना को दैवी संकल्प के साथ जोड़ने का पर्व है। इस भूमि पर लोग आते नहीं, बुलाए जाते हैं। आप उन सौभाग्यशाली लोगों में से एक हैं जिन्हें दिव्य सत्ता द्वारा बड़े उद्देश्यों के लिए चुना और बुलाया गया है। यह पर्व सौभाग्य के वरण तथा अवसर को पहचानने का पर्व है। हमें यह सोचना चाहिए कि क्या हम अपना जीवन एक साधारण मानवीय की तरह पशुओं जैसा जीवन जीते हुए गँवा दें अथवा कुछ ऐसा करके जाएँ जिस पर समाज और आने वाली पीढ़ियाँ गर्व कर सकें।

कार्यक्रम का संचालन श्री गोपाल शर्मा ने किया। इसका वैदिक कर्मकाण्ड श्री उदयकिशोर मिश्रा ने सम्पन्न कराया। शान्तिकुञ्ज के युग गायकों ने इसे भक्तिभाव से सजाया।

विशिष्ट झलकियाँ

- कुलपति श्री शरद पारधी जी ने मुख्यमंत्री जी का स्वागत एक पौधा भेंट कर किया।
- मुख्यमंत्री जी ने विद्यार्थियों को देव संस्कृति विवि. के प्रतीक धारण कराए।
- ज्ञानदीक्षा समारोह से पूर्व मुख्यमंत्री जी एवं मंचासीन आचार्यों ने देसंविवि. परिसर में स्थित शौर्य की दीवार पर जाकर उत्तराखण्ड के अमर शहीदों को पुष्पांजलि अर्पित की।
- कई प्रशासक-पत्रकार उपस्थित रहे।

नई पुस्तकों का विमोचन

ज्ञानदीक्षा में मंचासीन गणमान्यों ने देसंविवि. के निम्न प्रकाशनों का विमोचन किया।

- परम पूज्य गुरुदेव द्वारा लिखी गई समस्त (लगभग 3400) पुस्तकों की सारिणी। (बार कोड सुविधा सहित)
- देव संस्कृति विवि. की यज्ञ रिसर्च जर्नल
- आयुर्वेद के प्रचार-विस्तार के लिए समर्पित 'धनवंतरि' का अभिनव संस्करण

शिक्षक दिवस पर देसंविवि में गुरु-गरिमा का भावभरा स्मरण

कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने अपने संदेश में कहा-

परम पूज्य गुरुदेव की कालजयी शिक्षाएँ सारे विश्व को उत्कृष्टता की ओर ले जा रही हैं।

कुलपति एवं प्रतिकुलपति जी का सम्मान करते आचार्य एवं विद्यार्थियों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ

देव संस्कृति विश्वविद्यालय एवं गायत्री विद्यापीठ, शान्तिकुञ्ज में शिक्षक दिवस अत्यंत उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर गीत, एकल नाटिका और लघु नाटिका के माध्यम से महान शिक्षाविद् भारतरत्न डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के कर्तृत्व एवं व्यक्तित्व को याद किया गया।

अपने संदेश में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने आचार्य-विद्यार्थियों से कहा कि शिक्षक समाज के शिल्पकार हैं। वे विद्यार्थियों का चरित्र ही नहीं, बल्कि राष्ट्र का भविष्य भी रचते हैं। भारत वर्ष में गुरुओं की उदात्त परम्परा पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव का भावभरा स्मरण किया। उन्होंने कहा कि उनकी कालजयी शिक्षाएँ सारे विश्व को उत्कृष्टता की ओर ले जाने वाला चिन्तन प्रदान कर रही हैं।

शिक्षक दिवस के अवसर पर कुलपति श्री शरद पारधी जी, प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी एवं कुलसचिव श्री बलदाऊ देवांगन ने सभी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं को सम्मानित किया।

गायत्री विद्यापीठ में

गायत्री विद्यापीठ में व्यवस्था मंडल की प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या ने महान दार्शनिक डॉ. राधाकृष्णन जी के प्रारंभिक जीवन में उनकी कड़ी मेहनत का उदाहरण दिया। उन्होंने बच्चों को पूरे मनोयोग के साथ अध्ययन करने और जीवन को सँवारने की प्रेरणा दी। इससे पूर्व डॉ. राधाकृष्णन की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें भावांजलि अर्पित की गयी।

परम वन्दनीया माताजी का महाप्रयाण दिवस

साधनात्मक मनोभावों के साथ उठी दिव्य स्मृतियों की हिलोरें

परम वंदनीया माताजी के महाप्रयाण दिवस- भाद्रपद पूर्णिमा-10 सितंबर 2022 के दिन उनको शान्तिकुञ्ज एवं अखिल विश्व गायत्री परिवार ने विविध कार्यक्रमों के माध्यम से भावभरी श्रद्धाञ्जलि प्रदान की। ऋषियुग्म के समाधि स्थल 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' पर सामूहिक जप का आयोजन किया गया। महालयारम्भ के अवसर पर सैकड़ों समर्पित शिष्य-साधकों ने उन्हें जलाञ्जलि प्रदान की।

सायंकाल शान्तिकुञ्ज की ब्रह्मवादिनी बहिनों के संचालन में सत्संग भवन में आयोजित दीपयज्ञ एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रज्ञेश्वर महादेव देवालय परिसर में दीपयज्ञ का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर उन्हें नारी जागरण एवं नारी सशक्तीकरण का शाश्वत आदर्श प्रस्तुत करने वाली एक महान शक्तिस्वरूपा ममतामयी माँ के रूप में याद किया गया। उनके महान व्यक्तित्व और कर्तृत्वों का स्मरण किया। हजारों भाई-बहिनों ने इनमें भाग लेते हुए स्नेह सलिला माताजी को अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

वन्दनीया माताजी के महाप्रयाण दिवस पर जप-ध्यान करते कार्यकर्त्ता एवं शिविरार्थी साधक

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने परम वन्दनीया माताजी को भावभरे अंतःकरण से याद करते हुए अपनी श्रद्धाञ्जलि दी। उन्होंने कहा कि नारी समाज की धुरी है। नारी उत्कर्ष के बिना समाज का उत्थान संभव नहीं। नारी सशक्तीकरण के लिए समर्पित होना ही परम वंदनीया माताजी को सच्ची श्रद्धाञ्जलि है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय ने 'भारती' के योगदान को सराहा

श्री कृष्ण स्वीट्स भारतमेंगम भारती, चेन्नई के श्री मुरली द्वारा महाकवि सुब्रमण्य भारती की 100वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में किए जा रहे कार्यक्रमों की शृंखला में एक कार्यक्रम देव संस्कृति विश्वविद्यालय में आयोजित हुआ। राष्ट्रीय एकता, अखण्डता को प्रोत्साहित करने वाला यह कार्यक्रम भारतीय विद्या भवन, चेन्नई केंद्र, तमिल मैट्रिमोनी और वाईएसीडी ट्रस्ट, गोपालपुरम के सहयोग से आयोजित हुआ था। माननीय न्यायमूर्ति एस. राजेश्वरन लाल-न्यायाधीश मद्रास उच्च न्यायालय, श्रीमती मीनाका आईएएस,

कलैमामणि श्री मुरली-सीएमडी श्री कृष्णा स्वीट्स ने विशिष्ट अतिथि के रूप में ऑनलाइन जुड़कर अपने विचार साझा किए।

कार्यक्रम की शुभ शुरूआत मानवता के कल्याण के लिए गायत्री यज्ञ के प्रदर्शन के साथ हुई और चेन्नई की श्री सतीश रामकृष्णन सदस्य वाईएसीडी ने उद्घाटन भाषण दिया। श्रीमती केवी. सुभा एडवोकेट और हरिकथा कलाकार द्वारा 'भारती और दिव्य प्रकाश' पर एक विशेष भाषण दिया गया। उन्होंने भारती के कार्यों से गायत्री मंत्र का सार प्रस्तुत किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी, प्रतिकुलपति देसंविवि ने भारती द्वारा भारत की महानता का संदेश जन-जन तक पहुँचाने के लिए श्री मुरली जी के कार्यों पर प्रसन्नता व्यक्त की। इस कार्यक्रम में आंतरिक चेतना पर शोधकर्त्ता छात्र शामिल थे।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.org

Publication date: 27.9.2022
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23